

DPN 6062

Title : स्कन्द पुराण केदार खण्ड SKANDA PURĀṆA KEDĀRA KHAṆḌA

Run. No. 6753

Cat. No. 81

Micro. No.

Subject पुराण Purāṇa

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 47 x 10

Folios ³⁻⁸⁰ ~~62~~ ^{Extant folia.} Lines (in a page) 7/9
missing 1-2, 6-9, 51-~~60~~, 62, 68
Chapt. / act /

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

पशुपतिमान पःमाय

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Paśupati-man Paṭmaṃya

Script : New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

P. T. 6.

मान ४ स्वर्गयत्रा ४ का धला रुसम त्विगा ४॥ वेदिकं यपूत्र कृत्वा दक्ष ॥ ४ गूड या जंका ४ दानिदि (॥ रु विष्णु क्रियुति गुरुन गा ४ सदा ॥ असत्युति गुरु (॥ श्वेव
 भमिन ४॥ रु विष्णु क्रियुति गुरुन गा ४ सदा ॥ असत्युति गुरु (॥ श्वेव
 न वा धयूक सदा जिवं ॥ ॥ श्रीमह देव उवाच ॥ कार्यं नारु सि वै कर्तुं वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥
 मया रु गम् ॥ रु कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥
 नारु वै यरू वा श्री निरुक्त ४॥ कार्यं कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥
 य वा धितुं न गम् नारु नारु ॥ वि वै कपत्र मा रु त्वा (॥ गला दा हिम रुत पां जिवं नारु नारु गम् पत्र मानन्द संयुत ४॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥
 ४॥ यथा रु नारु नारु नारु ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥ वा दक्ष कर्तुं सर्वथा ॥

20

15

10

5

आ३

नापिगार्यो

असो विपुनक्षानस्य पियः सदा ॥ हनयुत पिभवा नीपतिने का इत्ययथा ॥ आत्मसमा विना मृदा सुधु मोनी समत्तन ॥ कर्मव्यस्मिन्नया ॥ असा नानी ना हि मया धु
 याचनवक वीपुननर्वववा द्विज ॥ सर्वैकवक्तिरुक्क रुक्क श्याय कर्म सरुलोमहान ॥ नग कुत्वा ववसु दधी सिद्धी कमववीत ॥ ॥ दधीचिनुवाच ॥ सर्वैषा मृषिवर्या लो
 रुविगात्मनम ॥ अनयार्थमहोखा गोविना गेनमसुत्तना ॥ विना अभिमहानुधो अगुलो नी रुविषा नि ॥ नवमू कुदधी धो मो नक नवविनिर्गत ॥ यरुवाग चदकस्य
 चागुर्म गत ॥ मोनो विनिर्जते दक ॥ पुरुसनिदमवुवीत ॥ गत ॥ जिव प्रिया विषादधी चिन्मनामत ॥ आ विरु चिन्मनामन्दा मिथ्या वादना ॥ ४२० ला ॥ ४२० वाक्का
 नास्त्वा कर्क कर्क कर्मलि ॥ वदवादाना यूर्य सध्विषु पूना गमा ॥ यरुमे सरुलं विप्रा ॥ कर्क कर्क विना दिवा ॥ तदा ते द वजयने चकु ॥ सर्वमहर्षय ॥ नगसि
 पर्वने ग न्य मो वा दन ॥ अना गुरुविता ननसखी हि ॥ पत्रिवो नीता ॥ दा काय वी मरुदेवी चका न विविधसुदा ॥ की ज विमानम कर्क कर्क का या ॥ सरुमुग ॥ की
 गदवी ददधमसुती ॥ यरुमे यार्ग साम ॥ ना हि ल्हास हिने युमु ॥ क गमिषा निव न्नाय विजय पृच्छ सत्वनम् ॥ तथा का विजया देवी न्य पुच्छय ॥ अचित
 गेनगसर्व दक स्य वमखा दिकम् ॥ न कुत्वा त्रिगा देवी विजया जाग संगमा ॥ कथयामास गत्तुर्वय इकं गजिनारु गम् ॥ अस्मत्कान लं देवी किमा कानन

४

मु३

न३

मकृत्तम् ॥ दक लपिगामा गाव विस्मृता ह्ययस्मिना ॥ पृच्छामि गकं नयाय कान लं वायका न लं कृत निश्वय ॥ अस्मप पित्वा सखिं गत वा गता गकं नयति ॥ ददर्श गैसरु
 म ॥ क्षुति लावनमवस्ति गम ॥ गले ॥ पत्रिवृते सर्वेष्वुमुमु दिरि सुदा ॥ वा ॥ लरुङ्गीरु थानन्दी ॥ जेला दा हिमरुग पा ॥ नन्दि स्वपा र्घ दामुखा क गिका या गिरि
 ष ल ॥ धू मो वरु ॥ ४२० के ४२० ज्वन वा रू रू रू चिना ॥ धू मो को धू के रु स्व धू मपा दस्त ॥ थे व च ॥ न गे वा नी च व रु वी ॥ ग ल नू डा न व र्कि ॥ क विरु यान को नी डा ॥ क व्र धा प्र ग थ
 यने ॥ विला चना प्रुक विच्च ॥ नू ही ना सु थ यने ॥ नू धा दना प्रुक विच्च ॥ नू धिनी ना सु थ यने ॥ क रू ही ना प्रुक विच्च ॥ च रू ही ना सु थ यने ॥ न वरु गा गु ग ग ॥ स ध्व ग कृ रि वा स
 स ॥ जटा के ला य स रू ता ॥ स ध्व नू डा क रू थ ॥ ४२० जि ग लु या वी ग ना म ॥ स ध्व वि य य र्घ वि ल ॥ ४२० रि ॥ स ध्व ४२० य वि वृ ग ॥ ग क रू ला र्ग क र ॥ ४२० रु यो ग या विरु ॥ आ स नं य न मा रु य
 आ क्रि य चि ना स रु सा ॥ ज ग म लिव र्म नि धि ॥ लि व न लु यि ना स्ता ॥ गे ॥ यो गि य क न व रू ॥ य म दि ने र्घ या रि ॥ सा व रु मा न य न ॥ स न ॥ कि मा ग म न का र्क क व द नी धु स म
 धर्म ॥ न व मू क ग दा गे न ॥ उ वा च स्मि ग ला च ना ॥ ॥ सत्य वाच ॥ यि उ र्म म गृ ह य रू ॥ के सा रु व न वा च ग ॥ ग म नं द व द वा ना ॥ ग त्तु र्घ क थ य यु ग ॥ तू द वा म र्घ र्ध म ॥ सू द रु ॥

क२

सहस्रगणिः कूर्चं गियन्महादव. सूक्ष्मं यो गिवर्द्धनं ॥ तस्मात्सर्वयुयत्नं न. अनादूना यिगच्छता ॥ यद्वाटं यिगुर्मय. वचनामसदा निव. गस्यास्तद्वचनं नृत्वा त्वरायां सन्तु
 गैवचः ॥ श्रीगोपुत्र उवाच ॥ त्वया राहुन गन्तव्यं देवस्य यजने युनि. गस्यथ मानिनः सर्वसूना सूत्रकिन्नराः ॥ गस्यथ यजने याकाः ॥ यिगुस्तवनं सर्वं लयः ॥ अनादू
 गय्यसूक्तं गच्छं गियन्मन्दिनी. अयमानं यायुर्वं गि. मन्त्रादधिकं गतः ॥ यत्र यमं दिवं यायुः ॥ नृत्वा यिगुर्गणवजरा. गस्यात्त्वया न गन्तव्यं देवस्य यजने नृत्वा ॥ न
 वमूकसमीपे न. महान्नमहात्मना ॥ उवाच श्रीयस्य कूर्वा यव्यं वाक् विद्वान् ॥ यद्वाटं यिगुर्मय. न सत्वं देववत् नृत्वा ॥ अनादूना सिगनाश. यिगुर्मद्वच विष्णु ॥ ग
 सर्वं कुरु मिच्छामि. गोवरावदनात्मना ॥ गस्याञ्जो वगच्छे मि. यद्वाटं यिगुर्मय. ॥ अनादूना हिमं नाथ. देवदेव जगत्पते ॥ नृत्वा कुरु गवानुदस्य यादशा निवः ॥ सर्वं
 विज्ञाता. खिलदृक् सुखारं गवानरु गरावने ॥ समीपं वाचयन् ॥ महान्नमहात्मना ॥ सर्वं सिद्धिदं गच्छेद्विद्वान् यका. वचनामसदा निव. ॥ नृत्वा विमो नमानुक्तं नाना विधेन
 धान्तिनाथ गच्छ ॥ यद्विस्महसा लिजं मूर्तोडा ॥ निवाक्या ॥ नेनेस्मृता देवी जगमयिगुर्मदिनी ॥ निनीश्वरं सर्वं महादवं गिविस्मिग ॥ त्वयन्मन्दिनी लिगस्या

५

महत्त्वं च निरुक्तं ॥ यद्वाटं यिगुर्मय. न सत्वं देववत् नृत्वा ॥ अनादूना हिमं नाथ. देवदेव जगत्पते ॥ नृत्वा कुरु गवानुदस्य यादशा निवः ॥ सर्वं
 विज्ञाता. खिलदृक् सुखारं गवानरु गरावने ॥ समीपं वाचयन् ॥ महान्नमहात्मना ॥ सर्वं सिद्धिदं गच्छेद्विद्वान् यका. वचनामसदा निव. ॥ नृत्वा विमो नमानुक्तं नाना विधेन
 धान्तिनाथ गच्छ ॥ यद्विस्महसा लिजं मूर्तोडा ॥ निवाक्या ॥ नेनेस्मृता देवी जगमयिगुर्मदिनी ॥ निनीश्वरं सर्वं महादवं गिविस्मिग ॥ त्वयन्मन्दिनी लिगस्या

क ३

म ५

वर्त ॥ यागिनीयक संयुक्तं तथ युमथ संवृण ॥ कुरे प्रचामने सुग संवृण ॥ महावर्त ॥ कचिद्रुणावृषा नृरा ॥ सिंह नृरा सुथाय ॥ अय नृरा सुग नृरा ॥ गृह्णा
 युगथय ॥ नृरा ॥ सध्वं सुदा दृष्टु विष्णु नृरा सुदीय क ॥ वीवरुडा महावा ॥ कं नर्ववा सुमवी ॥ मृगत्वया गंगयि स्मा द्विष्णु वन्दामहे वयं । ददस्य यद्वया नि
 त्वं कथं जागो । सिगद्वद ॥ दोका यिष्णु कर्णय च नृदृष्टं किं त्वया न द्य । त्वं वा यियं ददस्य । कवदाना र्थमा गग ॥ अवदानं पुयका । सिगवचा यिमहा सुज । उवमं
 कायुल म्या दो । विष्णु नृद सुवृ यि लम ॥ वीवरुडा गगो त्वत्वा पुनर्वा सुमथा र्ववी ॥ यथा नृ सुथा सुदि ममना सुग संलय ॥ गथा वित्वं महावा ॥ यद्वका मागु न
 सिग ॥ नृया मि यम नो दृष्टिं यदि नृ सुत्तमात्माना ॥ गत्य गद्वचनं लुत्वा वीवरुडस्य धीमग ॥ उवाच यद्वमन्दव । विष्णु ॥ सध्वं लुत्वा ॥ ॥ विष्णु नृवाच ॥ वृद्ध गज
 युसूना सिवा विग सिमहा मग मग । अननया धिग ॥ सध्वं यद्वार्थय नृ ॥ यन ॥ ददं नो विदिता र्थं नृ कर्म निष्पन्नं यद्वदि । अहं नृ कयना धीन सुथा सो विमहं यन ॥
 नृनेव का नृ लना ग ददस्य यज नृ युनि । आगना हं वीवरुड नृ उकाय समुहव ॥ अहं निवा नृ या मि त्वा । त्वं वा माचि निवा नृ य ॥ नृ सुक वनि । नृ विन्द । युहस्य समहा सुज ॥
 पुत्र या वन गगो त्वत्वा । दमाह जना दनं ॥ यथा निव सुथा त्वं हि । यथा त्वं यगथा निव ॥ सवाका यवयं सध्वं । गववा नृ कनस्य च ॥ गकुत्वा वचनं गस्य वीवरुडस्य मा र्थ
 पुत्र

१०

स्य च ॥ दवा क्यं जग दय नृ मन्व ॥ या धय स्वमहावाहा । मया सा र्द्धमं लकिग ॥ गवा मे ॥ यथ्यमानो हं गकुत्वा मिग वने त्वकं ॥ तथ्य क्वाच वीना सो । वीवरुडा महावली ॥
 त्वाय मे मकुलि । सिंह नादे र्जग र्जह ॥ विष्णु प्रविमहा धा । नृ सुना दचकान स ॥ गकुत्वा यन गदवा । नृ र्ण हिलाय य ॥ यन ॥ यद्वं च दृ सुदा सध्वं लोकया ला ॥ सवासवा
 दिनु नाह नान्दी वज्र लण यद्वल ॥ नन्दि नाच हग ॥ लकुत्वा लुत्वा नृ गथा नृ य ॥ वायु । नाह गग ॥ र्ण हिलाय य ॥ यन ॥ यद्वं च दृ सुदा सध्वं लोकया ला ॥ सवासवा
 मन्व सध्वं मन्व महाका ला वता निग ॥ कव वल च स गमं क्वा लुत्वा नाय गि ॥ सध्वं ॥ विनृ लो न स मं यद्वं । मृगु (युव मे हावल ॥ यय (धय नृ या गग ॥ गला र्ण विस्मय मि
 नृ नृ नृ नृ ममा गग च लुत्वा वल नृ ॥ यय (धय नृ मा सुल । नृ मृ गं च विग मृ यन ॥ यागिनी यक संयुक्तं तथ युमथ संवृण ॥ कुरे प्रचामने सुग संवृण ॥ महावर्त ॥ कचिद्रुणावृषा नृरा ॥ सिंह नृरा सुथाय ॥ अय नृरा सुग नृरा ॥ गृह्णा
 ॥ कुरे प्रचामने सुग संवृण ॥ कचिद्रुणावृषा नृरा ॥ सिंह नृरा सुथाय ॥ अय नृरा सुग नृरा ॥ गृह्णा
 नृ नृ वद ॥ नृ कमानं गदा सेन्य विला सु सवना द सध्वं । विहाय नं दिनं यथा नृ । वीवरुडं समाक्रिय नृ ॥ वीवरुडा विहाय व विष्णु द वन्दु मा ह्नि ग ॥ गथा युद्ध मरु गधा
 विष्णु द्वा नृ या निव ॥ वीवरुडं यद्वान्का हनु कामात्माना निग ॥ गाव क्कं गज सुहं हि । यून या मा समा र्जले ॥ वीवरुडा नृ या विष्णु इ निवा यी महावल ॥ गद नृ लो ह
 नीधः वज्र लण गद्वल । सिग जं च सवजं च । वा सव गं मृ मृ यग ॥ हाहाका नामहाना सीरु गानं गग यथा ॥ वीवरुडं गथा हं हनु कामं यून नृ नृ ॥ त्वनया मा

य १

म्रायमहर्गनमः॥ त्वं हिं प्रसृजामिष्टा, धागा त्वं युधिनामह॥ नमो नृजाय महर्ग, नीलकण्ठाय वधमः॥ विष्णुय विष्णुवाजाय जगदानन्दहर्गवः॥ उंकावस्त्ववयवका
 त्वं वरुणः॥ यवर्गकः॥ यक्षः॥ मियरूकर्ममि, यक्षानचिद्वरुणकः॥ त्वयो कथं यक्षः॥ गङ्गा दववदयता॥ वरुणः॥ मिसमहादव, कथं ददास्वयाहर्ग॥ गवाः॥ उवाचैष
 चिन्तयुतियातकः॥ गनयः॥ समहादव, सव्ययादिनायुता॥ नृदवदमहादव, यगुणः॥ कनयीति॥ ॥ जीमहादव उवाच॥ गुणस्वावहिनास्तुता, ममवा
 यिनामह॥ दक्षस्य यक्षः॥ गनयः॥ नृदगधमया क्वचिन्त॥ स्त्रीयमुकर्ममि ददाहर्गव, वरुणने सगयः॥ यत्र यक्षिणदकर्म, नाकार्यं नत्कदाचने॥ यत्र दक्षयत्र यत्र द
 मनी गङ्गा विद्युति॥ अवमूकः॥ गदान्ता, वरुणमसहिने॥ मूत्रे॥ यथो कनखलगीर्ध, यक्षवाटं युजाय नः॥ नृदसुधा ददन्त विवीनरुदुपयत्नः॥ स्वाहा सधा नृधाय
 नृगुममिममविनृ॥ गधममृययः॥ सध, विनवधुनेध विधं॥ यत्र चवदवसुगयका, नृद्वै किन्नराः॥ गङ्गा विना, यत्र मृताः॥ क्वचिद्विधं॥ अत्र गङ्गा समी
 दृष्ट्वा, वीनरुदा गले सुह॥ दधुधुधमसयकं, गङ्गा वरुणमदालिर्व॥ दृष्ट्वा यत्र किन्नराः॥ वीनरुदुमहावलम॥ उवाच युह सन्वा, क्वचिद्विधं॥ वीनरुदुमहावलम॥ उवाच युह सन्वा, क्वचिद्विधं॥ दक्षमानय
 दृष्ट्वा, यत्र दक्षगमी दृष्ट्वा॥ यक्षः॥ विलक्ष्णं गङ्गा, गङ्गा दक्षलमी दृष्ट्वा॥ अवमूकः॥ गङ्गा वरुण, वीनरुदुत्तना नृदिनः॥ क्वचिद्विधं॥ गङ्गा वरुण, गङ्गा दक्षिण॥ गङ्गा क
 वरुण, वीनरुदुमहामना॥ लिवः॥ कनायिनी गङ्गा, दक्षस्य सङ्गात्मनः॥ दक्षमिजा विनी वीनरुदुल्लस्या विचाधूना॥ अवमूकः॥ गङ्गा वरुण, वीनरुदुल्लस्या विचाधूना॥ अवमूकः॥ गङ्गा वरुण, वीनरुदुल्लस्या विचाधूना॥

१२

नमो नृजाय महर्ग, नीलकण्ठाय वधमः॥ विष्णुय विष्णुवाजाय जगदानन्दहर्गवः॥ उंकावस्त्ववयवका
 त्वं वरुणः॥ यवर्गकः॥ यक्षः॥ मियरूकर्ममि, यक्षानचिद्वरुणकः॥ त्वयो कथं यक्षः॥ गङ्गा दववदयता॥ वरुणः॥ मिसमहादव, कथं ददास्वयाहर्ग॥ गवाः॥ उवाचैष
 चिन्तयुतियातकः॥ गनयः॥ समहादव, सव्ययादिनायुता॥ नृदवदमहादव, यगुणः॥ कनयीति॥ ॥ जीमहादव उवाच॥ गुणस्वावहिनास्तुता, ममवा
 यिनामह॥ दक्षस्य यक्षः॥ गनयः॥ नृदगधमया क्वचिन्त॥ स्त्रीयमुकर्ममि ददाहर्गव, वरुणने सगयः॥ यत्र यक्षिणदकर्म, नाकार्यं नत्कदाचने॥ यत्र दक्षयत्र यत्र द
 मनी गङ्गा विद्युति॥ अवमूकः॥ गदान्ता, वरुणमसहिने॥ मूत्रे॥ यथो कनखलगीर्ध, यक्षवाटं युजाय नः॥ नृदसुधा ददन्त विवीनरुदुपयत्नः॥ स्वाहा सधा नृधाय
 नृगुममिममविनृ॥ गधममृययः॥ सध, विनवधुनेध विधं॥ यत्र चवदवसुगयका, नृद्वै किन्नराः॥ गङ्गा विना, यत्र मृताः॥ क्वचिद्विधं॥ अत्र गङ्गा समी
 दृष्ट्वा, वीनरुदा गले सुह॥ दधुधुधमसयकं, गङ्गा वरुणमदालिर्व॥ दृष्ट्वा यत्र किन्नराः॥ वीनरुदुमहावलम॥ उवाच युह सन्वा, क्वचिद्विधं॥ वीनरुदुमहावलम॥ उवाच युह सन्वा, क्वचिद्विधं॥ दक्षमानय
 दृष्ट्वा, यत्र दक्षगमी दृष्ट्वा॥ यक्षः॥ विलक्ष्णं गङ्गा, गङ्गा दक्षलमी दृष्ट्वा॥ अवमूकः॥ गङ्गा वरुण, वीनरुदुत्तना नृदिनः॥ क्वचिद्विधं॥ गङ्गा वरुण, गङ्गा दक्षिण॥ गङ्गा क
 वरुण, वीनरुदुमहामना॥ लिवः॥ कनायिनी गङ्गा, दक्षस्य सङ्गात्मनः॥ दक्षमिजा विनी वीनरुदुल्लस्या विचाधूना॥ अवमूकः॥ गङ्गा वरुण, वीनरुदुल्लस्या विचाधूना॥ अवमूकः॥ गङ्गा वरुण, वीनरुदुल्लस्या विचाधूना॥

॥ ५ ॥

गमास्यशाननदृष्ट्यासहसोत्कृष्टयथाधर्मरुणावनशायुज्यामासगानसर्वान्महन्त्युगिमांसदा॥त्वविभेदेवनेसर्वेउचुर्ववस्तुतयमम॥॥निवगलउचु॥
गाननोनकाकामे॥॥नुसंभामिगद्युगि॥नाम्नायुवर्कानिर्णयनूदस्यचमहात्मनः॥गच्छत्वावचनंतेषांयमनचयूनस्तुग॥॥नुसंभामिमानस्तु॥युधिमाहिलिवालेय॥
आनीतायंगदायवे॥यार्थदयुवर्कानिमे॥गच्छत्वावचनंतेषांयमनचयूनस्तुग॥॥नुसंभामिमानस्तु॥युधिमाहिलिवालेय॥
न॥॥लीलकनउवाच॥किंदागच्छन्त्युयल्लयुयच्छमिगवच्छिन्ना॥॥गिल्लत्वावचस्तुमहन्त्युगानुय॥आनन्दार्णमचनयुमानावाचकिंचन॥गदाकृतामहं
लनयार्थदाहिमहात्मनः॥चलुनाम्नाचवित्थागा॥मनुस्यचसखप्रिये॥गच्छत्वावचनंतेषांयमनचयूनस्तुग॥॥नुसंभामिमानस्तु॥युधिमाहिलिवालेय॥
हयहयगिर्वेनाम्ना॥ल्लयुयच्छमिगवच्छिन्ना॥॥गिल्लत्वावचस्तुमहन्त्युगानुय॥आनन्दार्णमचनयुमानावाचकिंचन॥गदाकृतामहं
॥यने॥यच्छि॥रुलेष्टि॥जलेष्टि॥विमले॥सदा॥कनवी॥यच्छि॥युमाना॥गच्छत्वावचनंतेषांयमनचयूनस्तुग॥॥नुसंभामिमानस्तु॥युधिमाहिलिवालेय॥
लंचविलिख्यते॥ययर्कनागयच्छि॥कलान॥विमले॥सदा॥कनवी॥यच्छि॥युमाना॥गच्छत्वावचनंतेषांयमनचयूनस्तुग॥॥नुसंभामिमानस्तु॥युधिमाहिलिवालेय॥
यगत्मा॥ल्लयुयच्छमिगवच्छिन्ना॥॥गिल्लत्वावचस्तुमहन्त्युगानुय॥आनन्दार्णमचनयुमानावाचकिंचन॥गदाकृतामहं

五

[illegible]

यि ।

20

कृतं तत्पुत्रं

मा ३

मुनिमानस्य नन्दिनः ॥ आयागा हि महाबलसु धाम्ना यामहावल ॥ कालत्रयं मरुतो ओ धनस्या लि ॥ युता यवान् ॥ गंडद्वारं ह्य विगुप्तं नन्दिनं विसीयात् ॥ पुत्रो धाः
 (स्ववमरुसो ह्यहीनसु दातव्यं ॥ किं प्राप्तेन कर्तव्यं यथा पूर्वमविम्वलं ॥ तं पूजां प्रयदाहृत्य विल्वपर्णं ॥ समर्चयेत् ॥ सपदे निस्पंदवत् ॥ कृत्वा गलुषवा विभा ॥ नैवं
 यीतं च लं वैवमृ गमांसं च ॥ ये चोद लुवत्य निगो ॥ मोउल्लयस्व शृंगं गतं ॥ तं दृष्ट्वा मरुदाय्यं विनेयां स वै चित्रं ॥ पुत्रो धसा स रुत दान न्दी यो कूलं वै तस ॥ गेन वा
 कानि गो विप्रावरुवा वेद वा दिन ॥ न विप्र नैषु गत्वा वै किं ना गेन च यत्कृतं ॥ किं कार्यं मेधरा विप्रा ॥ कथं नां वयं यथा यथं ॥ संयुधायी तनु ॥ सर्वमिति त्वा धर्मो भूमि ॥
 उच्यते सर्वं न दा विप्रा नन्दिनं जातं किं ॥ उच्यते विप्र ॥ समेत्य न्ना इति वायं स वने यि ॥ तस्मा दानुये लिङ्गं त्वं स्वगृहं वेणु स रुम ॥ तथेति मत्वा सो नन्दी ॥ निवस्य त्या टनं कृणी ॥
 कृत्वो त्वं गृह मानीय ॥ पुनिष्ठा यथा विधि ॥ त्वं पुं यो ॥ कौकत्वा तव नल्लसु ॥ ललिनी ॥ उच्यते च नैव नैव के पुं ॥ पूजां मां स वेतदा ॥ गथय नं धुना याग ॥ किं नाग ॥ निवर्मा दि
 वी ॥ यावद्विना कया मा स ॥ तिनी लेव न दृष्ट वा ॥ मोनं विहाय स रुसा ॥ सा को ल मिदम ववी ग ॥ हा ल म्हा कृ ग ना ॥ सित्त्वं दर्लया न्मान मय वै ॥ न दृष्ट ॥ निभया त्वं हि ॥ यथा
 मय कलव वम ॥ हेल म्हा ह जगन्नाथ ॥ निपुना क वा च पुना ॥ ह न ह म हा द व ॥ दर्लया न्मान मो ॥ सर्व सां क्रय मधूने वा ॥ ४ क्रिय ॥ सदा निव ॥ किं नाग ॥ नृग गो न ॥ गो वी ना सो
 ज ० नं स्वर्क ॥ विरुदा लुगं ना वै रु मा स ॥ धा ॥ ३ ॥ हा ल म्हा दर्लया न्मान न ॥ कृ ना मां यथा यथा सि ॥ ३ ॥ निदि ॥ हा ग ना ॥ सु लि मां स मत्वा य सर्व ॥ गस्मिन् गत्वा क व न व ॥ किं नाग ॥ न
 भावे वी ग ॥

तना २

१३

10

हा

हसा ॥ क्रिय ॥ स्वर्कं दयं कृत्वा ॥ सूत्रा ग ॥ सव सिधुर्व ॥ तथेव जल मानीय ॥ विल्वपर्णं त्वं न्निगमा ॥ पूजां यित्वा यथा न्नायं दलुवत्य निगो ॥ उच्यते ॥ धानं किं न स रु वी न ॥ किं नाग ॥
 निवर्मा निधि ॥ या इहं न सदा नृद ॥ यमये ॥ य विवा विग ॥ कथं न ॥ नेव य निमान कये दी च लु ॥ नैव ॥ गेनृ ही ला क व नृ ॥ उवाच य निर्मल यन ॥ गेनृ वी न म हा पा रु
 म रु का मि म हा म न ॥ वेनृ वृणी स्वात्म हिर्न ॥ यत्किं ॥ ल विनं म हा न ॥ उच्यते ॥ स नृ ड ले ॥ महा का सा म्दा ॥ निग ॥ यथा ग द लु व रु मो ॥ रु क्ता य न मे यो य ने ॥ गेनो रु डा व रा य द न
 व नृ यार्थ या म्हा ॥ जू हं दा सा मि ने नृ ॥ त्वं भ स मा मो न स ल य ॥ उच्यते ॥ गेनृ म्हा ॥ यथा ग द लु व रु मो ॥ रु क्ता य न मे यो य ने ॥ गेनो रु डा व रा य द न
 लु व शा सि त्वं स दा ॥ तस्मा ग्त्वे द य र्ना न्ना ॥ निपुना क वा किं च न ॥ गदा ॥ निष्कर्म वा ॥ सा क ॥ किं नाग ॥ स ग दा रु व ॥ द दो या र्थ द म्हा त्वं ॥ दान या ल त्वं मे व च ॥ गदा उ म नृ ना द
 न ना दिर्ग रु व न रु य ॥ रु नी नां का न ल ॥ न नृ व नां नि न द न च ॥ गदा इ इ रु या न द ॥ य ट हा य म हा स स ॥ न ग दा ग मा क ॥ विस्मया त्व विगो य यो ॥ ग या व न य ग निव ॥ ४ ॥
 ग ॥ युथ म स ॥ ग ॥ किं नाग ॥ हि ग थ दृष्ट ॥ नन्दि ना च ग थ रु ल ॥ उवाच य सु ना वा ॥ स नृ दी विस्मया न्निग ॥ किं न स रु क्ता मा सो ॥ य न मे यो स मा धि ना ॥ दानी य त्व या र्ण रु
 सु धि ना सि य र्ना य ॥ त्वं रु का ह मि ह या क्ता ॥ मा नि व द य र्ण क न ॥ ग द्वा व च नं ग थ ॥ किं नाग ॥ स नृ ना ॥ निग ॥ नं दि न च क र्ण ॥ लं क र्ण स म्पा ग ने ॥ यु ह स्य रु ग वा नृ उ ॥ किं ना द वा
 स म व वी ग ॥ कार्यं त्वया स मानी ना न ल ना मि ह स त्रि धो ॥ ॥ किं नाग ॥ उवाच ॥ विजि रू क ॥ किं नाग ॥ न लं क र्ण लो क र्ण किं न ॥ ग व रु क ॥ स दा द व ॥ गेनृ जा न ग ॥ स दा ॥ यु य हं न

दी ४ - ट ५ २

व

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40

45

५१

च० सिवसागृहकृष्णल० यत्र भस्त्रिन० कंकरीसहिनागसूत्ररीतदमादयन॥ उर्वसमभयंकृत्वा देवान्युगिसमागत॥ ॥ श्रीवक्रवाच॥ लिङ्गस्य मस्तकं दवा दृष्ट्वा
नहमकुत॥ समीचीनं चास्मिन्व कंकरीदलसंयुतं॥ विष्णुलविमलं लङ्कायुं सन्ननमकुत॥ त्रैलोक्यत्रमेनीयैश्च दर्शनीयं महापुलं॥ ॥ ७ ॥ गृहं मेया दृष्टं नदृष्टं मदि
नां कृत्वा॥ वेष्मलमहि वच० लुत्वा सुनाविस्मयमायय॥ उर्व विस्मययुं लुक् ० लुत्वा देवगान॥ गिर्युं गितावत्सर्वलम्बिषु नक्षत्रदीपक॥ याता नदागत० स
य० सर्वेषां भवदत्तवत॥ अस्या योर्न नदृष्ट्वा ह वै मेलाकने तत्यव॥ विस्मयो मे महाजात० यातालात्यवत० यवन॥ अतलं सुगलं चायि विगलं च न सागलं॥ तथागतस्त
लं च वेयातालक्षु तलातलं॥ तलातालाञ्च विनाशं वं लुत्वा च द्विलोचनं॥ लुत्वा दधिचलुत्वा तत्सर्वं सनिनी॥ किरं॥ तन्मूलं न च मध्यं च न चानां कृत्वा विग्रं॥ लि
नेत्रयी महादवा ये नंदं धीयं भोजनं॥ यस्य यसादा इत्यन्ता सूर्यचमृषिः ० सह॥ स्तवर्जं नर्मधं जगत्कृत्वा च विष्णुः॥ यत्र देवा विगं सर्वयुत० सर्वयुतिष्ठेन॥ यस्मिन्
ध्रुवि नयं योर्न तस्मिन्मीगुनस्य च॥ कलेवस्य वचं लुत्वा उक्ता लाके यिना सह॥ उवाच मृषिः ० साकं वदवा दनता सुदा॥ देवानां यत्र मां कृत्वा विष्णुः० यत्र मां मग० गदने
वदवा लुत्वा निवदानं लम्बनं॥ लुत्वा गृहं दृष्ट्वा मनीयादकसं निगं॥ लुत्वा द्विस्मया विष्णुः० सर्वेषां विक्रमहेसि॥ त्वयानदृष्टं मूलं अस्यां लिङ्गस्य चाधना॥
॥ ८ ॥ तावत्तुमां लस्याध्वना रुवसूयन॥ अस्या कीहि मया दृष्टं नागकाया विचान॥ उहस्य च गदा विष्णुः० वचकमभं दल०॥ मयानदृष्टं मूलं च मस्तकं च

काननख

۱۲

३४

त्वया कथं ॥ दृष्टं नरसिंहावकान् कानर्कश्चिमे ॥ तदा हनुवाच ॥ विष्णुसर्वलुपं लुपं ॥ वक्रान्निर्मितं च ॥ अर्धमेतच्च नाच ॥ तस्मात्पिता महाज्ञाता ॥ सर्वथा मयितत्त्व
 ग ॥ गथासर्वथिमुपयस्यस्य वा ॥ अमयुजयन ॥ तदा विष्णुवाच ॥ दृष्टं वक्रान्निर्मितं च ॥ अर्धमेतच्च नाच ॥ तस्मात्पिता महाज्ञाता ॥ सर्वथा मयितत्त्व
 यागगुणसिन्धुं युकल्यो ॥ आकृष्टं विचनं ॥ विष्णुसर्वलुपं लुपं ॥ वक्रान्निर्मितं च ॥ अर्धमेतच्च नाच ॥ तस्मात्पिता महाज्ञाता ॥ सर्वथा मयितत्त्व
 वपुत्वा ॥ सर्वथा वक्रान्निर्मितं च ॥ अर्धमेतच्च नाच ॥ तस्मात्पिता महाज्ञाता ॥ सर्वथा मयितत्त्व
 कगकी सो ॥ दृष्टं वक्रान्निर्मितं च ॥ अर्धमेतच्च नाच ॥ तस्मात्पिता महाज्ञाता ॥ सर्वथा मयितत्त्व
 तदानरागमावाली ॥ सर्वथा वक्रान्निर्मितं च ॥ अर्धमेतच्च नाच ॥ तस्मात्पिता महाज्ञाता ॥ सर्वथा मयितत्त्व
 वृनासह ॥ कायसूत्रं ॥ आनृषावादेन तेत्यर्था ॥ मूर्ध्नाकां त्वया शिवमनु गेयं गथं लुरु ॥ अयं विष्णुं मुखं गच्छ सर्वधर्मवर्हि ॥ कृतं ॥ सगन्धकं गकी वा यि
 यो ॥ अर्धं निवाच ॥ तं विष्णुसिन्धुं दहाजुनं वाचमिनि ॥ तदानरागमावाली ॥ वक्रान्निर्मितं च ॥ अर्धमेतच्च नाच ॥ तस्मात्पिता महाज्ञाता ॥ सर्वथा मयितत्त्व
 गृथिरिंसाकं ॥ तथैव च यथा धर्मा ॥ तस्माद्युयं मयूषाश्चरुवयू ॥ लयरागिनि ॥ मृषया विचधर्मिणा ॥ सुखवाक्यं ॥ दृष्टं वक्रान्निर्मितं च ॥ अर्धमेतच्च नाच ॥ तस्मात्पिता महाज्ञाता ॥ सर्वथा मयितत्त्व

५५५५५

ना॥ यावकाष्टविद्यायाः प्रीतिर्यत्नज्ञानयामकाः॥ आत्मसंवितासुद्धाः॥ यत्रत्यत्रविनिन्दिताः॥ नृवंशकाश्चमूनयावकाश्चदवगासुधा॥ निनलकासुसर्वसिर्गल
नलमाययः॥ ॥०॥ निधीस्तदेयना॥ लकदानख॥ लोचमाहात्म्ययष्टा॥ ध्यायः॥ ॥३॥ ॥ लामणउवाच॥ गदावतंसुनोःसर्वसुखयाधिरयाविता॥
००॥ विमलिहमेण॥ उक्तेष्टाः॥ नविद्वलाः॥ ॥ उक्तावाच॥ त्वंसिद्धनृयीगुमहापरावा॥ वदानवथासिमहात्मनूयः॥ यत्रवसवजगदात्महृन्कृन्सदानन्दमयन
निर्य॥ त्वंलीक्षीसर्वलोकानां॥ हलीत्वंविचक्षणः॥ लक्ष्मिसिमहादेव॥ जेववासिजगत्पते॥ लयालिङ्गसुनृयीगोयकमेगञ्जनाचनम॥ इज्जल्लेखजगन्नाथमायामा
हिमचुनसम॥ अहंसुवासनाः॥ सर्वयदनन्वचनाक्रमाः॥ यत्रगद्ययिलाचापुगथाविद्याधनोक्रमी॥ त्वं हि विष्णुसृजामिष्टा॥ त्वं हि देवाजगत्पते॥ कर्तृत्वं तु वनस्यात्य
त्वं कर्तायनयः॥ यत्रक्षयासमाकर्महादेव॥ देवदेवनमाहुः॥ ॥०॥ नृवाहिदेवागालिङ्गनृयीमहंभूतः॥ नृययः॥ मागुका मासुमहंभूतमकल्मसं॥ ॥०॥ नृययउच॥ अ
ज्ञानिनावयं कामा न्नाविदामास्यमस्तिनि॥ त्वं हि उक्तयनं॥ आनिर्गुणिया मयियन्महः॥ सत्त्वं वदानवथासिलिङ्गनृयीमहंभूतः॥ नृययः॥ सिद्धदेवदवण॥ अस्मासिमुक्त
गानिनि॥ इज्जल्लेखयाचयंसर्वनविदामः॥ यत्रयदम॥ कवलं देववादेनविदामासहंभूतः॥ नृययः॥ यिष्णुत्वज्ञानोद्वेगसमेतिगा॥ नानुद्वेगसमेतिगा॥ नानुद्वेगसमेतिगा॥ नानुद्वेगसमेतिगा॥
स्तिनिमे॥ त्वं क्त्वायनमात्माच॥ उक्तगिस्तुविराविनी॥ त्वमेवमागाचयिगात्वमेव॥ वधूषसखात्वमेव॥ त्वमीषनावंदविदेकनृयी॥ महानूरावः॥ यत्रिचिन्मानः॥ त्वमात्मा
त्वमेव॥
नमायुते॥

[illegible]

कदा न खलु ॥

अन्य किं विना जाना मि न क सं मां ऊ नं विना ॥ मृषि रुद्र व नं शुक्लामनसा च विमृश च ॥ अनया किं कृ नं पूर्व क र्यं कस्य यसा दग ॥ गदा क्लृप्तं यमृषि त्वा गत्त र्वे स्नान च
कृषो ॥ विस्मये न समा विष्ट रूष्मि रूमा रुव रुदा ॥ स विस्मया रू द थ ग द्वि दिक्वा ड द्वा ल को स्नान वगाम्च निष्ट ॥ गिव पुण र्व मनसा वि विन्य स्नाना त्य नै वो ध मा वा य सा
पि ॥ ॥ ॐ निशी क्क न्द पे ना ले के दा न र व ॥ पु जे व ज म्भु स फ मा क्षय ॥ ॥ १ ॥ ॥ लाम ज ड वा य ॥ गत्क थो पि पू नो व द्ध न स र्व ध र्म व र्ति ॥ ४ कृ ते ॥ ७ कृ को च्चा सो स्म
त्राय स्व स व र्णु स्य च त स्के न ॥ ल म्भ ॥ हि म हा पा प ड रु म स्तु पू स र्व दा ॥ यू ग का ना स दा म न्द ॥ कि न वै ॥ स ह र्म गे ग ॥ न क दा की ति नं गे न हा नि ग यू ग म
मा ना हि न दा ना वा च किं च न ॥ पी ति गाय रू व रु श्री ने वा के ॥ ४ पा प कृ रु म ॥ यू गे त्व या रु नि स दा ग ॥ ४ ग ड्वा किं प्र य द्ध सि ॥ नो वा ग त्क थ गी र्गु य थ ग ॥ ४ न ड र्म नं ॥ य
द्वा त्रि नै प्र य द्ध मि ना गु वि ल्य व वी द्ध च ॥ ४ र्म क र्म न वा के न ग ना र्म कि न वा द य ॥ ग दा नि शी थ स म यं ग ना सो गिव म न्ति नं ॥ वि ना नै रु रु का मा र्वे गिव म रु क मा न रु रु ॥ वि
ता नै रु रु स र्व व र्द्ध या व भ्रा च य नी ति स ॥ स ड्वा ग म रू द वा वं क न्द नो रा वं न ग क्क न ॥ अ न न कृ ग म ये व रु द रं न य पू ज न म ॥ क वि नै र्गु य द्ध कि के वि द्धि क्कं न थ य न
॥ गि ना रि ॥ ४ क वि द्वा ग ॥ यू ज नं चो स्य स व ग ॥ अ न न य क्क र्म क र्म स र्व धा म धि के रु वि ॥ स र्व धा म व रु क्क नां व नि ष्ठा र्य व न पि य ॥ ॐ मि म त्वा न या मा स वी
न रु डा दि रि र्ज ले ॥ स र्वे त्व नि गा ड्वा म्भु ॥ ४ के ला सा क्क व व ल्ल रु गो स र्वे ॥ म नू ना द न ना दि नं रु व न ग र्यं ॥ ग नू ड्वा सो ति लाम रु ग रु क ना सो इ ना त्म वा न ॥

५१

[illegible]

ਸਿਰ

महादेवा विष्णुयी महेश्वरः सर्वभूयं पार्थयं तु विष्णु सर्वमहायन्त्रः ॥ अहं हि सर्वदेवानां यत्रावर्तते सदा ॥ मम सर्वे नदिनी वाञ्छन्ति त्वाम् दिगमानसां ॥ वेदेषु
मानगा गीर्हि विष्णुस्मां गुणयुजि ॥ ॥ देवाः ॥ नमो रत्नवने गुरुयः देवदेव जगत्पते ॥ त्वदा ध्यानमिदं सर्वं जगदगच्छना चरन् ॥ ॥ गच्छिष्ये त्वया विष्णुधर्म
देवी विष्णुयि ॥ ॥ अवनानाठकः ॥ यत्तु मम दार्ढ्यं त्वया यत् ॥ मत्प्राप्तत्वा त्वया वदामि ॥ कृष्णाय नमः ॥ हयग्रीवस्वयं यत्तु दद्यामि मधुकंदरौ ॥ गथाकम ० नृप
धृगं सो वधुन खिल ॥ ॥ वानाह नृप मां स्मय ॥ दिनः ॥ अहं नृप ॥ दिनः ॥ कलियुद्धे ॥ हनानृप सिंह नृपि ॥ गथा ॥ वव वलिर्वक्षः ॥ दद्यामि मम नृपि ॥ ॥ गुरुयः मत्प्रे
तत्त्वाकारं वीर्यं नित्यागि नृप ॥ उद्धृतं नृप विष्णु ॥ गथे वयं प्रिया लय ॥ नावली सौर्या ॥ रत्नमूर्ति ॥ ॥ ॥ सर्वं संध्याधिना देवैः ॥ रत्नवानरैः ॥ रत्नवानरैः ॥ उवच
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ वासुदेवा जगन्माय ॥ ॥ देवाः ॥ लुप्यन्ति वाञ्छन्ति ॥ यस्मात्तु सृष्टं महत् ॥ लिलादं ॥ यत्तु नृप ॥ सर्वं यत्तु त्वया ॥ विना ॥ ॥ अवनानां नृप ॥ वने नीगननालि
गा ॥ अहं हि मोन्यात्तु ॥ अहं नृप नमो रत्नवने ॥ सौरि विष्णुस्य याध्याया ॥ गुरुदत्तं त्वया च ॥ उक्ते विद्यासहाया ॥ मिनरुवर्गकार्यसिद्धयः ॥ जनकस्य गुरुसाकाशे ॥ उक्ते
विद्याजनिष्ठिनि ॥ ॥ रुक्मिणी ॥ विना वलं साक्षाच्छिवध्यानं यत्तु यत्तु ॥ गयसां महतायुक्ता ॥ उक्ते विद्यायिदिक्कृति ॥ गदायै इरुया ॥ उक्ता ॥ नावली ॥ रत्नवर्गिदे ॥ ॥ नमो वयं
नरकास्याह ॥ अन्वयं गत्यं ॥ अहं नृप ॥ उक्ते विद्यायां वलादहं ॥ उमि ॥ ॥ गदासूसा ॥ रत्नवर्गि ॥ यत्तु यत्तु ॥ धर्मनिर्दिष्टं ॥ ॥ ॥ सर्वं संध्याधिरत्नवाने ॥ विष्णुयने

ममङ्गल॥समाग्राह्यसुत्रानसर्वानस्वधामयनमययो।गत॥सर्वसूत्रगुणज्वगानयनास्तथा।वालीअर्जुनसंहार॥सुगीवास्तुमन॥सुम॥गथावाक्रान्तसंहारजीव
वानकथिवृज्जन॥लीलादगेनयानन्दी।निवस्थानचन॥यिअ॥योवर्थकाद(लात्रडा।हनुमानसमहाकथि॥अवनी॥सहायार्थविष्णुनमिनन॥स॥मैन्डा
दयंस्तकयय॥सर्वसूत्रसकमा॥गुर्वसर्वसूत्रगुण।अवगनयथागर्थ।ग।थेवविष्णुनत्यन॥काललानन्दवर्द्धन॥विष्णुस्यन॥जनाअवनाम॥स्यनव॥धे॥एनयावि
लक्काविष्णुअगयसावगनइवि।दाइपुवयिविष्णुअ।अवनी॥युगायिनो।लफुघो।रुनेनोरयागोविद्यागोअवनगय॥मिथिलाधियन॥कन्यो।योयाकावअवा
दिरि॥सावअविद्यावगनत्सुन॥कायासिद्धय॥सीगाजागालोङ्गलस्य।यङ्गहमि।विकर्य॥ग॥गस्मात्सीमनिविद्यागा।विद्यासुसात्विकीनदा।मिथिलार्यास
मृत्यन्ना।मैथिलीस्यरिधीयम॥जनकस्यगृहजामा।विष्णुगाजनकात्मजा॥द्यागावदवनीयुध॥वृद्धविद्याद्येनालिनी॥सादरजनकनेवविष्णुवयनमात्मने।नया
थाविद्यासाह्व॥दवदवजगत्यनि॥उ।नयसिनीनोमो।विष्णु॥यनममङ्गल॥नावर्जजुकोमाव॥नामानजीवलावन॥अनयवासमकनादेवानाकार्यसिद्धय।
ल॥यावगनायिमाहान।गय॥यनमडकनम॥गगाययनयोरुक्ता॥दवनाकार्यसिद्धय॥लफुघो।रुनेनोरयागोविद्यागोअवनगय॥मैथिलीधियन॥कन्यो।योयाकावअवा
वगानला॥सगल॥वावेर्निम॥अहिमासिनजीघनन॥विष्णुनाद्यानिग॥लमे॥निवसानूयमायवान्॥सगल॥समू॥सधावम॥रि॥सहस्रवतो॥निवपुसा

20

नीर

अथ
७२

गसथेवाञ्जैप्रवाहयः॥उवमादीनिवत्तानिचक्रमका निवदू न्ययि।नीनानिया निस्वर्गोच्चदेत्येसादसाधु रिभायू न्यराजीवतामावयमिगानिचसागन।तदास
विस्मयाविष्णुवनिनाहगुनंयुनि॥द्वानिर्झित्यचास्मारिनीगानिवदूनिच।नत्तानिगुसमूहपैथयमिगा।निगदङ्गनम।वसंस्वद्वचनंयुत्वा।उगनोऽयत्यवाचनं।
जुष्टमधलुमनव।सूत्राञ्जैरुविष्णुमि॥दीक्षिगस्यनसंदहसस्माहाकासउवच।जुष्टमधेविनाकिंचित्स्वर्गसाङ्गनेयार्थन।गुनवचनमोक्तय।गुष्टीरुतोवलिस्वदा
॥वत्तवदवैसाङ्गचय।थाविगमकाययन।ॐनुविणकिनीयुका।जगमयनमैष्टिन॥विक्राययामासगदा।मध्वनाञ्जैरुयादिकम॥गकस्यवेचनंयुत्वा।यन
मध्वीउवाचनम॥सविनित्वासूत्रानसर्वाने।तयासाकसूत्रानिगा॥आवाधनार्थंनक्तमा विष्णुसर्वगुनंयुत्वा॥गथमिमत्वागेसर्वगकाशालोकयालकोऽवका
नचयुनस्तुत्य।गटदीनापुर्वेस्यच।थाविष्णुमेऽसर्वहर्निस्तुयुचकम॥॥वत्तवाच॥देवदवजगन्नाथ।सूत्रासूत्रनेमस्तुग।युष्टीकाश्रया ननुयन
मात्मनेमामुन॥यत्तु।सयत्तुनथासियत्तु।सिन्मायेन।गगाञ्जैरुययाविष्णुदवानावनदोरव॥गुनावनदूयायाञ्जैरुययाञ्जैरुगकैरुञ्जैरुगसमृष्टिरुसा
कं।गसाहंनसमूहन॥॥ग्रीरुगवानवाच॥गुनावनदूयासर्वंनक्षत्रीनिकिमङ्गन।ययोनोअधर्मिष्टाःकवलंविद्ययात्मकाः।यिगनीनिदिनोयेथनि
देवास्तुनसंलयः॥अनेनयत्तुगवत्तुन।सद्यस्तुल्लमानेनम॥कर्ममवास्यानकस्य।सद्यउवनिनीदगी॥वियनीनोयदकालः॥यन्मयस्यरुवत्तुया।रुगमेगीयुक्त

२१

०

वृत्ति।सर्वकाशार्थसिद्धय॥नेनेवकात्र।लनन्दमदीयवचनंयुन।कार्यहनास्तुयाकाशोदेत्येऽसहसमागमः॥उर्वरुगवतादिष्टः॥गकः॥यनमवृद्धिमान॥ययावम
नामी।हिलासूत्रलंयवनेऽसह॥ॐनुः॥समागमंयुत्वा॥ॐनुमनोय्यानिगवत्तवसहसेनानहनुकर्मयुनन्दनम॥नानदननदादेत्यावलियुवलिमावच॥निवा
विगस्तुद्वयोञ्जैप्रवाहयः॥जुष्टमधलुमनव।सूत्राञ्जैरुविष्णुमि॥दीक्षिगस्यनसंदहसस्माहाकासउवच।जुष्टमधेविनाकिंचित्स्वर्गसाङ्गनेयार्थन।गुनवचनमोक्तय।गुष्टीरुतोवलिस्वदा
॥वत्तवदवैसाङ्गचय।थाविगमकाययन।ॐनुविणकिनीयुका।जगमयनमैष्टिन॥विक्राययामासगदा।मध्वनाञ्जैरुयादिकम॥गकस्यवेचनंयुत्वा।यन
मध्वीउवाचनम॥सविनित्वासूत्रानसर्वाने।तयासाकसूत्रानिगा॥आवाधनार्थंनक्तमा विष्णुसर्वगुनंयुत्वा॥गथमिमत्वागेसर्वगकाशालोकयालकोऽवका
नचयुनस्तुत्य।गटदीनापुर्वेस्यच।थाविष्णुमेऽसर्वहर्निस्तुयुचकम॥॥वत्तवाच॥देवदवजगन्नाथ।सूत्रासूत्रनेमस्तुग।युष्टीकाश्रया ननुयन
मात्मनेमामुन॥यत्तु।सयत्तुनथासियत्तु।सिन्मायेन।गगाञ्जैरुययाविष्णुदवानावनदोरव॥गुनावनदूयायाञ्जैरुययाञ्जैरुगकैरुञ्जैरुगसमृष्टिरुसा
कं।गसाहंनसमूहन॥॥ग्रीरुगवानवाच॥गुनावनदूयासर्वंनक्षत्रीनिकिमङ्गन।ययोनोअधर्मिष्टाःकवलंविद्ययात्मकाः।यिगनीनिदिनोयेथनि
देवास्तुनसंलयः॥अनेनयत्तुगवत्तुन।सद्यस्तुल्लमानेनम॥कर्ममवास्यानकस्य।सद्यउवनिनीदगी॥वियनीनोयदकालः॥यन्मयस्यरुवत्तुया।रुगमेगीयुक्त

०

0

॥ कदाचिद्वि

ननु शलवत्तगतलक्ष्मिनि। आगमस्तवसंनिधौ। सर्वकलीयथा श्रुत्वा त्वयानास्तुगसंलयधनुवमूकानावदनं। गदादेत्ययनिः स्वयं। विमृशयत्रयावृष्टा। कार्याकार्यवि
चक्रलक्षणं संयुज्यामास। वक्रमानयुवः सत्रमे॥ नाकयासेऽसमं गच्छन्तथा सत्रगोलेऽसह। यत्तथा ध्वंससत्यानिष्कवकानिष्कगानिर्व। वलियुत्तयत्तगानि। सचकान
युवन्दनः। उर्वचैः संसमयकृत्वा। लक्षः स्वार्थयनायलः। वलिना सहचैवामीदर्थं। अत्रा मे हान॥ उर्वविवसगसस्य। सुगलं धिगं गकुगोऽवत्सवावहवाक्रासने। गदाव
क्षिमकल्ययग॥ संस्मृत्यवचेनं विष्णुं विमृशययूनः युनः॥ उर्वकागुसगम। असीनादवदोदस्वयं॥ उवाचयुहसन्वायं। वलिमृदिष्टेनीगिमान्॥ योयमान
यानित्वयावीन। अस्माकं च गथावलं॥ गगादीनिवदूनीव। नत्तानिवदूनीनिय। गगानिगगदूनीदेव। सागनयगिगानिदे॥ युयत्ताहियुकरुंश। अस्मांस्तुनया नि
गोऽनं वा'था'द्वन्देयन्दु। नत्तानामिह सागनाग॥ गहिनिर्मथनेकायुः रुवगकार्यसिद्धये॥ वलिः युवर्हिगसून। लक्ष्मि सूननन्दनः। उवाचलक्ष्मिनिः कनदीम
थनेरुवग॥ गदानरोगेगावाली। मद्यगेरीननि। स्वना॥ उवाचददय्यांश्च। मथनं द्वायसागनम। रुवगविलवृद्धिर्हि। रुविशगिनसंलयः। मत्तनं चैवमत्तनं ननु
नगवासुकिम॥ यथा देवाश्च देव्याश्च। मीलयित्वाथ मथगा। नलीगगविगवाली। निगम्यचतदासूनाः। देवैः साङ्गं गगेऽसह उद्यमं च युनयगः। यानां लानिगनाः
सर्वं गदाने अस्माः सूनाः॥ अजगमनरुलं सर्वं मन्दनयवगाहमं॥ देव्याश्च काटि संख्याकास्तथा देवानसंलयः॥ उद्यका सह सायार्थं। मंदनं कनकयुग॥

नारायणं कुरुतां कारं सुलं येव महायुगं । अनेकान्तरसंवीगं । नानादुमनिध विगम ॥ चन्दने ४ यात्रिजामेध । नाना यन्ना गवम्य के ४ नाना मृग गज कर्तु । सिंह साई लय वि
गम । यदु किन्नर गन्धर्व ४ स विगं समं भावनम ॥ ७ ॥ उर्व विधं महा लिल । दृष्ट्वा गमन सक्तमा ४ उच ४ या ४ लय ४ सध्वं गदा गय ध्वं गारु मम ॥ ॥ दवो उच ४ ॥ अ उ सुवा च
यं सध्वं विरूय मिह मा गता ४ गयुध महा लिल । यत्र याम्य कोत्रक ॥ ७ ॥ उवमूक सदा लिलो दव देह ४ समन्द न ४ उवाच युयुतो रत्नाय वं विगुह वा नेव च ४ गं नेय
नयुया स ४ यध्वं गामन्द नाचल ४ ॥ किमर्थ मा गता ४ सध्वं मत्समीय गइयुगां ॥ गदा वलिनूवा वंदं येसा व सइल वच ४ अमृती त्या दय स्या । र्थ । त्वं मत्क रव सूचन ॥ ग
थ निमत्ता गइयु । दवाना काय सिद्धय । रादवा अमृता । अदं न्युयु नि वि । लय ग ४ के दिगा च त्वया य दौ त्वजं ल हित्व या न घ । गनुं कथं समर्थं हं । रावतां का
य सिद्धय ॥ गदा दवा मृता ४ सध्वं मृता माना महा चलम ॥ ७ ॥ उत्था दयेयु न गुलं । मन्दनं च गता इतं ॥ क्षीना पूर्व नं गु कामा अ मंल का सं गदा रव न ॥ यध्वं ४ य निग ४ स
आ । दव दै था य विधु वं ॥ क विरू गम मृतां क विग । क विन्मू क्य या रव न ॥ ये निवा दन गा ४ क विरू विरू लत्व मा गता ४ ७ ॥ उर्व र ग्नी य मा जा गो ४ सध्वं गमन दान वा ४
॥ चं गना यत्र मायाया । उचुवर्जं दी नूनं ॥ नृदं न क महा विधु । लय ग गे ग वत्सल । त्वया गम मिदं सध्वं जं ग मा जं ग मंचयं ॥ दवाना काय सिद्धय । यो इह मा ह
विस्तदा ॥ गान्दह सहा विधु नृ अ य नि सं स्ति ग ४ लिल या य ध्वं ग ४ मृन्मया या य गत्क ल ग ४ गमू त्म नि ग दा दव ४ सध्वं याम रयं द दौ ॥ ग मू त्क य ग दा द

कदाचिद्वि॥

[illegible]

न३

३१

五

वयनादमूर्खाः कवचाश्च मर्मसंज्ञाः मर्मलक्षणानि सागनमाजुनि निर्मलनाडागदीनाश्च हलाहलमूले लाघुदहनं चोदं आदहनं दिवोक्तसंज्ञाः अधुर्ध्वदिनः सर्वथायं
हृत्तनेरुक्तलमं गुमिगुं सर्वरुतानां कोलकूटं मर्मयन्मन ॥ दृष्टवदनं स्वकनकभाजसां न सत्यनाजं सहयवतनं न गेवदि न्वायि सुनास्तदानीं युलाघमानाश्च
सुत्रं समनोऽनधि वमधुमुद्ययलुग्याः ११ ननं ससुने ११ ददस्ययजने नमोऽयथजागं नथ रुचन ॥ सत्यभाकं गताः सर्वं रुनुला आदिता रुलम ॥ वदवोश्च विविधैः का
लेकूटं युगम्यानि ॥ विज्ञानां स्वरुसंदहः ११ सत्यं सत्यं विदामिव ११ रुनुला कं वच ११ रुला कालकूटं रुयादिना ११ सत्यभाकं चर्मयोका ॥ सुत्राः ११ सुनदानवा ११ तावद्वाम
गुणकालकूटं संयुक्तिर्गनं सत्यभाकं समगं ॥ सुवकां ददाहिर्गनं नदानीं जाद्वल्यमानं ये रुयाजुग ॥ ११ जनिता सत्यभाकाश्च निगं गा यि यिना मह ११ सत्यका
चनले ११ येनोयलेयनारुचन ॥ रुदो नवके ११ दृष्टाश्च कर्म ११ सुनाः ११ सुनाः ११ नमोऽयि माला नानावदतु निवो जित ११ ॥ वकावाय ॥ अकार्यं किं कृणं दवा ११ कमा
नका राय मृगन ११ ॥ पुनाश्च वजाभाश्च नान्यथ ममरा चित्तमा ११ नना दवे ११ यनिवृता वेदाय निअद ११ सह ११ नानागमे ११ सुयत्री ११ कालकूटं रुयाश्च ११ नगधुना
विना दवा ११ दमूच ११ यनस्यनम ॥ अविद्या जाल संवीना ११ कृशमि ११ नकाश्च किमा ११ वकां चयनस्तु यनदा दवास्तु विना ११ वेकूला मावजुन सध्वं कालकूटं रुयादिना
११ वका दवा मुयिने ११ पुनदा यनं विष्णुनालेयनूयं विष्णुमीनम ११ वेकूला मालिखम ११ दजमाधवकं सर्वं सुना सुनग ११ ननं चोना ११ तावद्वालं न सुम

५१

हत्वालकुटुम्बसमत्यगम॥दन्वथवक्रलालाकंवेकलंचददाहवै॥कालकुटाग्रिनादल्लविश्वःसर्वगुहालयः॥यावदे॥सहितः॥सद्यस्तुमालसदृशचक्रवि॥वेकलं॥समा
 साद्यःसर्वत्राके॥समावृणम॥जलक॥लम्बसर्वीना॥सर्वलाकासुदारवम॥अष्टावनलसर्वीनी॥वक्राणवक्राणसह॥रुमीरुगणकावापु॥जलकुलसममङ्गुम॥
 भासुमिर्नजलवाग्निर्नवायनेमरुसुदा॥नोहंकावावचमरुमूलविश्रासे॥धेवच॥निवस्यकायात्सुजागं॥तदारुसममयजनेन॥॥॥गिणीकदानरवलेकेन्द
 युना॥लेलेवन्ममहाहाहलेयसंगकथनेनामनवमाधुय॥॥॥॥॥मूनयउच॥युतयाकथिगवृक्षनवक्राणसचवाचैव॥रुमीरुगणकायात्कथं॥सृष्टिष्य
 वरुणा॥कृतावक्राचविवृष्टकृता॥पृथ्वादयः॥सूना॥यग्यसूना॥सूना॥कृण॥रुमीगालयगगा॥अगड्ड॥किमरुवरुतसद्यैवकुमहसि॥आसयसादात्सकलैवत्केल्यनाथनादिगम॥
 गसागङ्गानमयगमम॥लेजानासिनेवायन॥॥॥गिष्टुसुदासेधैमि॥निरुविनात्मरि॥सूना॥आसनमस्तुत्यवाञ्छेधमथाववीग॥॥॥लामेणउवाच॥येदावक्राणमधका
 आकादेवाविव्याग्निना॥हविवक्रादयाथनलाकयाला॥सवा॥सवा॥तदाविक्रायिग॥लम्ब॥हन्मन्महोत्तमना॥॥॥हन्मन्उवाच॥हन्मन्महोदय॥हत्कमाजगग॥यने॥मयावि
 धुविना॥लेनकृणगेया॥सूदृजयम॥थनमेकिनेमोत्तना॥अयं॥गिचमामयि॥उद्यान॥ययुक्वै॥नि॥गेया॥क्र॥लामधिकारवृण॥॥॥गकटाहमधका॥आकासेनविव्याग्निना॥सजी
 वयमहादेव॥त्वंगगगियेनोक्त॥॥॥वमत्यथिगसनेयिनाकावृषरुधज॥विघ्नाश्वकावसूयल॥नलामधियगिनागदा॥लेमन्मूवीववीगण॥॥॥निनाकावा॥निनामय॥निनेज

नाशमकलं कथं दीना ललाहि न ॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ हृदयं ललाहं मया ॥ ललाहं यत्र यायुर्ग ॥ गुरुं कानात्मकं सर्वं ॥ जगद्गुरुं च त्रयम् ॥ स्तिर्गिकवानि गुरुं कान ॥ यलथात्य
रिभवच ॥ विद्धि मां त्वं गलयनं ॥ कवलं रूक्षि मयं न ॥ माया विन हि गं लोकां ॥ देवादेन यत्र सदा ॥ क्वि मां स्वयं यत्र ॥ तदानन्दे कलक्षयम् ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ यदित्
कवलं स्नात्मा यत्र मानन्दलक्ष्म ॥ गस्मात्त्वदयत्र किञ्चिन्नाय दक्षि यत्र कथं ॥ नानात्रयं कथं जगत् ॥ सूत्रं सूत्रं विलक्ष्म ॥ त्रिविर्गं मां रुज्जनं ॥ गिरिदेवं प्रलक्ष्मि नमः ॥ रुग्णं मे
उरिष्ठं ॥ नानोरुदसमन्विग ॥ जानीमं सात्रचर्कच ॥ निर्या निर्या विलक्ष्म ॥ यत्र स्यत्र विष्टाधन ॥ ज्ञाने वाधन माहिर्गं ॥ कस्माद्वाधनता ॥ कचित्केचित् सुगुणमाणिता ॥ ज्ञाने निष्टाय
कचित् ॥ यत्र स्यत्र विष्टाधिन ॥ उर्वसं लय मायनं ॥ गहिमविष्टरुधुज ॥ गुरुं गल्लक्ष्म ॥ क्वयार्थं वृहद्वरुधुज ॥ उर्वसं च वरुधुज ॥ क्वग ॥ सर्वं महाराग ॥ सा
त्विकात्राजसाक्षमी ॥ युरुस्यरुगवानर्गं ॥ गल्लक्ष्म ॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ कालं लक्ष्म च सैजगात्रज ॥ सत्त्वगमां सिच ॥ मेनावृत्तं जगत्सर्वं ॥ सदैवा सूत्रमानुषमे
॥ यत्रिष्टयमानमगच्छ ॥ नेष्ट्वं यत्रे मायं न ॥ विष्टेन त्वेष्टमिष्टे च ॥ कर्तृकत्वाच्च नेष्ट्वम ॥ योवद्वेष्टेन सैयका ॥ राखल ॥ सदानिव ॥ लिङ्गवृत्तिविष्टवृत्ति ॥ जाइष्टगात्रदालि
वान् ॥ विष्टवृत्तिजगद्धानि ॥ कार्यकानलत्रिष्टी ॥ लिङ्गवृत्तिसरुगवान् ॥ निमने सुकृष्णदत्त ॥ उकात्तिगियेनान्कि ॥ वंक्कविष्टात्मलक्ष्म ॥ गल्लक्ष्म ॥ विष्टया विष्टाक्षवृत्ति
नमस्त्यत्र ॥ ॥ मृषयउचू ॥ यद्वृत्त्यन्तर्गैर्गसर्वं ॥ जगद्गुरुं च त्रयम् ॥ गल्लक्ष्म ॥ यद्वृत्त्यन्तर्गैर्गसर्वं ॥ कथं जानीमं इष्टगात्र ॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ साक्षात्पुनर्निर्गल्लक्ष्म ॥ गल्लक्ष्म

कदा न खलु ॥

[illegible]

37

५२

चसंस्कृतं दृष्ट्यननचदृष्ट्यन ॥ लिङ्गनलकि संस्कृता यत्रस्यत्रमवर्तते ॥ निवात्यसि लिङ्गलाकं जदेगेगधवाचनम् ॥ गलेलनायिगगकूनं नयत्रयगधविदम् ॥ गगावाच
महाभोजा गजधकागलेऽसह ॥ सलकि कसूयमानं मुख्याचयनयागदा ॥ ॥ गलेलनाउवाच ॥ नमामिदं वदं वलं वनये संनं लका विगि कून नययं युगा नं ।
कूनानात्यनयनमअगिनयं नूयात्यनयनमं गत्वनयं ॥ गत्वात्यनयनमममूलं च जानन्दारययनमं निर्विवादम् ॥ धूमात्यनगभोजा निधमवत्युगिरास
गं ॥ युक्त्यननगस्तुहि लक्ष्मसकूनमचक्रुः ॥ युक्त्यननगस्तुहि मया कृतिरिनीयमे ॥ नुव विधस्तु रगवान स्वमीयया सुजस्य थालये सियाहि विष्टे
अस्मन्नोत्सवमिदं युनयं सवस्तु विस्तित्युगचनचनम् ॥ यथायनासीरुगवान महं लक्ष्मलाकूनो थ सिचनोचनत्मा कूनखलीधु सहजीवकायं च
वाचनं गस्तु कलं युगन्व ॥ नुव सुता महादवा गलेलनमहात्मना । अस्मन्नोत्सवमस्तु रगवान स्वमीयया सुजस्य थालये सियाहि विष्टे
लिङ्गनयलेगस्तु विमलचकनाहदा ॥ सववासूनमर्था सुवलिगिजगुमिच । गगकूनो देगा नयवकययायनयायग ॥ वस्तु विष्टुसूनं नुव लाकयात्मा
महवयय ॥ यदो विद्याधनो ॥ सिद्धा गन्धर्वायनसां गल ॥ उक्तिगो लुवगं सव निडाय विगगा ॥ व । विस्मयं नसमा विष्टावस्तु वजीगसाधु मो ॥ सवदवासून
थेव उचनो ययवहदा कालकूटं नमहता सवविडा विगोचयम् ॥ मुगयाथाकृता ॥ सवसलोका लाकयाकमी ॥ ॥ यवूनगदा देया सुव रगता सदा क्तिगा ॥

[illegible]

34

विजागृह्णन्मनकस्तदा। गांडुमानकगः कृत्वा गन्धर्वानगनायमान ॥ मर्मथूगृत्विनाः यूनं द्वावा लुवसूना ॥ निर्मथुमाना इदधेः रावत्सूयवर्चसं। यत्नामा मर्म
नर्तको मृगोरथमहत्तरं ॥ स्वकीयसूयकाः एतन्नामयनीजगुरुयम। चिन्तामलियुक्तेषु को मृगं देहं लिख ॥ सर्वसूना दइसूवेको मृगं विष्णुवगदा। चिन्तामलियुक्तं कृत्वा
मध्यवर्तदा सूना ॥ मर्मथूयूनववा द्विगजगन्धर्वलात्कटा ॥ मथुमानाः सगस्तस्माद्विष्णुवसे मंडुतं ॥ ददणनवमत्तानां यूनं एतानां वगं गजं। तथेव गजवत्तं गं चतुःषष्ट्या म
मं विर्गं ॥ गजानां यालुलानां च चतुर्दशमदानि ॥ तानमर्चानमधुगः कृत्वा यूनवमर्मथूय ॥ निर्मथुमाना इदधेः निर्गता निव दून्यथा ॥ मदिना विजय रं गीसुथालुनगं
जना ॥ मृगीव उन्मादकनाधुसूयः यूनस्तथा ॥ स्वयिनायके यज्ञनगीने नदनदीयथ ॥ यूनप्रगता गमहा सूनेन्मा मर्मथूय द्विमसूना लमेः मरु ॥ निर्मथुमाना इदधेः नदीमा
त्मादिशुलेक्षी गवने कनाथ ॥ आनिदिकवक्रविदावर्थं निगथा चाना मूलविशालुष्टुति। वाग्वेकविशाले विदाः ॥ समर्थकं चित्ति द्वि मृद्धिमाया मलुथा ॥ या वैष्णवीया। ग
नेः कविदाः ॥ गथा च माया मयिना नियुक्ता ॥ वदन्ति सर्वे नेक सिद्धे नेकया यागमाया क्लान्तं क्लान्तिना ॥ ददणु सुमहा लक्ष्मी आयातां लनकेः सूना ॥ एते वीचय
वगीस्त्रिधा यथा किं जलकटयत्नाम। सुमिनां मृद्धिजां लामानवशा वनदे यत्नाम ॥ विचित्रवक्रा वलं यत्नायका इयुगा ॥ विष्वाक्षीं सूनां तां नु सूनी वा चानुलाचनी
॥ सूमेधा चानुजघनी वृहत्कटिगठनेथा। नानावत्तयदीये प्रनीना जिन मूर्खा वृजा ॥ चानूयसे न वदनां हावनूय वल्लिगां। मूर्द्धनि विद्यमाने नेकं यत्नायि विना

१२

यत्तत्पत्रं ५

कदाच
खलु ॥

34

ॐ गथादवाननूत्सुकान ४

[illegible]

८५२

20

कदाच
खण्ड ॥

वनाज्वर्युवकमानुभाहिनीयुयमास्तिना। दृष्ट्यायागदादेत्याः सर्वरुगमनाम। विस्मयनसमाविष्टावरुवस्त्रुविगद्व्या॥ ॥ वलिनुवाच ॥ सुधात्वयाविरुक्ता सर्वथा
 नाकिङ्गवत्। लीधुत्वनमहाहनि। नेकुन्यवचनं मम ॥ उवमूक्यावाचदं समयमानावलिपुनि। श्रीलभनेवचविष्णुसंकरिचिदिवियुताः। गुरुनसाहसमायामूर्खत्वम
 गितारिगा। अल्लोचत्वं निद्वयत्वं। श्रीलभदायाः। स्वरावजाः। निस्तरुत्वं च विष्णुयधुत्वं च वगत्वं। स्वस्तीलभनेव विष्णुयादायानास्त्रुगसंलयः। यथाचैवदा नाचव
 काहिंसायनायलकाकायथागुजोनाय। अयदानोऽजवकः। धुत्वं गथा मन्थानो। मूक्यासगर्गवधिः। मया सह रुवहिप्रकथं सख्ययवर्णनं। सर्वथागुनविष्णुयाः क
 युयंयवका। कृदं ॥ गस्मा रुवहिः ॥ संचित्याकायाकाय विचक्रुः। करिचिं यत्रयावृष्टा। युयत्नादात्मना। हनी। उवमूक्युवचनं गयादद्यावलिः स्वयं ॥ उवाचयुहसन
 वोष्ठा। मद्यजादगरीनया। यात्वयाकथिगानायागम्यामम्यजनयिया ॥ तासत्वि कथमानानां मध्यगनासिन्धुः ॥ किंत्वयावदनाकं न कुन्यवचनं हिनेः
 युहस्यदवीयावाच। वलवोष्ठादनकनं ॥ कविद्यामित्रमवाच्यं सूकसूकमिगियुता ॥ ॥ वलिनुवाच ॥ अयामृगं च सर्वथा विरुजस्वयथागर्थ। ज्ञेयादकंचगृक्रामः
 सख्यं सख्यं वदामि ॥ उवमूक्यागदादवीभाहिनीसर्वमज्ञला ॥ उवाचाथे सुनानसर्वान कुर्वन्त्यलोकिनां गनि ॥ ॥ श्रीभाहिन्युवाच ॥ युयं सर्वकृताथोऽपि जागदव
 नकचिन्। अयायवाससयुक्ता। अमृगस्याधिवासनं ॥ कियगामसून। एव ॥ एव ॥ कचिदस्मिन्वशाः। अरुगेयानलिकृद्यैर्गार्जनननिकथा ॥ न्यायायाजिगविस्मनदणमा

३६

15

10

5

लनधीमगा। कर्तुयाविनियोगश्च। लोच्योत्थमवच ॥ गथमिमत्तागुसर्चय। अकंदवमायया। चक्रुस्तथापिदेगयाभाहिनानागिकाविदाः। मायासून। चगदा। रुवगांनिकृ
 गानिवे ॥ मनाः। निमहाहनि। मयुरा। निमहागिच। गययविविस्तेः सर्वसूनागाः। समलंकृताः। क्लृपयित्वासूस्मन्वडाः। यूयंकिल्लमगुगः। नागो। जागनेयसर्वः। कृगंयत्रमया
 मूदा ॥ अथयसियुजागेच। यागस्तानयुगासूदा। अमृनावलमिरुया। यकिरुगायथकर्म ॥ सर्वमावधकंकृता। गदायाननगा। सूना ॥ वलिप्रवृषयवोष्ठा। नमूचिः ॥ रव
 वद्धो। सुदंष्ट्र। एवसंजदीकालनमिर्विरीयलेशवागाविबिल्लुलेः। रूरा। निर्वूरुः। यद्यसवस्तथा ॥ गथमूदायमूदोचनिर्गूरुः। रूभवेच ॥ महिषामहिषारुष्ट्रविजाराय
 ॥ युगायवान् ॥ चिद्रुना। रथामहावाङ्मूर्तुननवृषासूनः। विवाङ्मूर्तुकाद्याना। धानोदीद्यावृदलनः। उगचोचवहवोदथदानवनाक्षसाः। यथाकर्मथायविष्टानाक्ष
 ॥ कुरुस्तथेवच। गयचिर्गकादीनादेत्यानायकिना। स्तिगाः। दृष्ट्यासूदानयादद्यामृगार्थं हिवेद्विजाः। यरुगं गच्छूधृदिनयादद्याकृगंमहग ॥ सर्वविष्णुयिनाम
 ॥ गृहीतकलभगदा ॥ एरुयायनयायका। साक्षात्माविष्टमाहिनी। कल्लुनगदादवीकल्लेनविनाजिगा। एव ॥ एव ॥ रुयत्रयाकाया। उगर्गमगलमगलो। यनिवृषधनाः। सर्व
 सुनोऽसूनाकिं। आगनासेत्कल्लदवयगर्गसूनारुमाः। गान्दृष्ट्याभाहिनीसद्यः। उवाचयुमदाहमा ॥ ॥ भाहिन्युवाच ॥ एगंक्रुगिथयाः। धर्मसर्वस्वसाधकाः।

ना।

गुर

सं१

१२

१२

20

कंदान
खण्डु॥

७

य१

समाना महात्मा नाक सुदानी लक्ष्म वाव धाव न ॥ ग (येव सर्वान् गुणमान ॥ सुनां ७ कानां दुर्दृष्टान् सर्वान् ॥ यत्तु यत्तु लक्ष्मणादा सर्वदेवास्तु वाचिना ॥ इदुर्वर्यम्
वीगा मही हित्वा गगा दिव ॥ यावद्विद्वन्मोक्षं वा नाक सुवेत्यत्र गमन ॥ गलिने रक्तमा (यि वं गन महा गो गो ॥ निवर्णन पीमा का कृती चन्द्रा यिरु य वि
कल ॥ स स्मृत्य मनसा लक्ष्म गदा मुय नार वग ॥ ॥ यं धावा च ॥ न भादवी महादवी ॥ देव देव जगत्पुत्र ॥ त्वना (धरु वेद वे ल गहि मा वृष रु धु ज ॥ ७ व मु क सु दा
लक्ष्म ना विरु गे सु ॥ ४ स्वयं ॥ मो रं श्री ४ ॥ गलिने रक्तमा जडा कृती य विरु य ग ॥ ग ग यं यं ग य धा य धा (ला ॥ ग ग व नि ग य वि ॥ गा व जडा ४ समाया ग ४ मय मानं सदा निव ॥ ॥
नाक नू वा च ॥ नेम ४ लि वा य लो ना य ॥ उक्ता (य न मात्मन ॥ लि ग नू य म हा द व त्वा न मा सि ज ग त्य ग ॥ ४ गा वा सा य द वा य र ता ना य ग य न म ४ महा द व न मृ त्यु ज ग
दान न्द ह ग व ॥ म मा ध र कृ र गो सो षा ग गो हि ग वा नि क ॥ स ध्या म वे रू गा ना मा ल य स्त न म ल य ४ ॥ ना हा स्त द य ना रु ४ ४ सा म ना (धरु व रु दा ॥ नि ना स्थि व व द
न्य व द द ल क्षु व नं लु न ४ ॥ गलिना हि रु या चै व अ मृ ग कृ वि न ग दा ॥ ना नि स र्वा लि दृ ष्टा नि ॥ गि दु ना य न म ॥ छि ना ॥ आ ल यो हं स र्वा रि रु गो ना ना गु र्ग ल य ४ ॥ अ मृ ना ली
सू ना ली च स ध्या म वि व ल रु ४ ॥ ७ व मु क सु दा ना ४ ४ द धा न नि न सा लि व ॥ मो लि स्तु र्ग दा च ४ ४ धा कृ मृ गं शु कृ ज रु या ग ॥ ग न न स्य च ता नि नि ना सि स व रु न्य वि ॥
७ क य ध न गं वा च ॥ ७ ७ कृ त्वा म ना ह न ॥ व र्द ध नं ७ ४ लि न सि सा म ध र रु ष ली कृ ग ४ ॥ ग स ना ग का ल कृ ट स्थ नी ल क ४ ॥ रु व दि जा ४ ४ द वा ना का र्थ सि द्धा र्थ म लु मा ला

३६

च३

७

७

य२

ना१

रुगा गथा ॥ लि व सा धु ग या लं रु सु धा वे म लु मा ल या ॥ लु लु र थ म हा द वा ॥ द वा ना म रु य यु द ४ व र्द ध ना र्क लि व सा म हा त्मा ॥ द वा धि द व मि य ना न का ह न ४ ॥ ग ज स वा थ न नि या नि
म हा न्द थ ध का थ नं कृ न र्ध ल ४ ॥ ग ना धु ग थ न लि न स म (ध वं लु च वृ णी कृ त वा रु या य ह ॥ व दा ४ य ना ना नि ग थ म मा र्थ ॥ त (ये व ना ना लु ग थ लु ल म ॥ ७ लो गि ना ना म ग र द
र द मी मी मा स मा ना लु र व ॥ नि मु क ४ ॥ ना ना न मा च व म ग यु र द नि नू य नी य ज ग द क वं ध ४ ॥ लि वं हि नि र्ण य न मा त्म द व ॥ रु न्म भ ह ल य न मा त्म द व ॥ वि मा हि ना मृ ट ज ना
४ यु म र ४ ॥ लि व न जा न नि य न मा त्म नू य ॥ थ न व स र्वा वि धु न च य न थ ना लि ग थ न कृ नं स म र्ग ॥ य स्या नि रु गं हि ज ग त्यु द य ग ॥ लि द्वा कृ गं वे व रु गं कि न च ॥ इ र्द न इ र्द य
न मं य र्ग र मं द रा न्ना नि नि य य ग या ॥ की र्ति ना ना न इ र्द ४ क दा वि द्वा द ग थ य ४ य न मा त्मा लि व ॥ आ ज्ञा वा वि द वि ज्ञा वा उ रु मा ध्रु ध मा यि वा ॥ लि व रु कि न ना नि र्द ॥ लि व
७ व न मं ल य ४ ॥ थ व य न कृ ग य र्ज ॥ लि व स्या य नि लो रि ग ॥ इ र्द स मा य मा या नि य र्थ या धा गि र त्म र्म ॥ य दी य मा ला कृ र्वा नि का रि कृ णि द्वा नि गा ४ या व क लं पु क ल नि दी
या र्म नि द्वा स नि (की ॥ गा वृ ष ग म हा सा लि दा ना स र्ग म ही य न ॥ की स र्क ने ल र्म य का दी य द रु नि वा ल थ ॥ दा ना न रु न के ला स ॥ लि व न म हा द ग ॥ अ ग सी ने ल र्म य का दी य द रु
लि वा ल थ ॥ स्व की य वृ ष ज ॥ वे द ल य वृ ष द ल य र ४ ॥ मा द नं गं स दा वि ज्ञा र्क ४ ४ स र्म ग ४ ॥ लि वा ल थ ॥ रु नि ना यि हि जा य नं दी य दा न रु स न दि ॥ गि ल र्म ल न स र्म य का दी य द रु नि
वा ल थ ॥ ग या नि य न मं रु नं कृ ल स कृ स म नि गा ४ ॥ क र्पू वा नु नू धू य थ य र्ज नि स दा लि व ॥ आ ना नि का स क र्पू ना थ कृ र्वा नि दि न दि नं ॥ ग या धू वं गि सा य र्थ ना गु ना र्थ वि च

७१

不
不

269

[illegible]

प्रक
न

[illegible]

महायन्त्रः

न्यायः मकामनेव जायते । नार्या विषय रुद्धन । याय श्रुति विधीयते । मन्त्राणि विधिः कार्यः कामना धिक्कृतं न हि । अज्ञानजनि गथाय । याय श्रुति विधीयते । गत्मान्त्वया कृतं यच्च स्वयमेव
हनादिजः । याय श्रुति विधीयते । सुस्मान्नास्मिन्निजिया । यावन्मन्त्रा मन्त्राणि । नावदयूहि नारुव । नानाप्रमथसंज्ञं च । यत्कृतं न स्यात् । मन्त्रं गत्मान् देवद्यानि नाहि द्विजायदा ॥ सच्चिदं वचनं
यी न निष्ठति यथा न्वयि । नानावसूक्तं याये । हीयते ययुनिद्वल ॥ गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवद्यानि नाहि द्विजायदा ॥ सच्चिदं वचनं
रिष्टसद । साकानां कार्यं सिद्धार्थं । दुवानां च वृहस्पति ॥ अर्द्धकृतं मन्त्राणां ययुनिद्वल ॥ गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवद्यानि नाहि द्विजायदा ॥ सच्चिदं वचनं
नान्विनायुर्द्धवनाजानेमां पुत्रं ॥ कृत्वेन मन्दनं कृताः । मन्त्रा युनिद्वल मित्रं ॥ अर्द्धकृतं मन्त्राणां ययुनिद्वल ॥ गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवद्यानि नाहि द्विजायदा ॥ सच्चिदं वचनं
नवीं पुनियेगर्थं ॥ नाश्रुतां प्रकिंकार्यं विमृष्टं नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवद्यानि नाहि द्विजायदा ॥ सच्चिदं वचनं
चनमः ॥ गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवद्यानि नाहि द्विजायदा ॥ सच्चिदं वचनं
विक्रमलवा । गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवद्यानि नाहि द्विजायदा ॥ सच्चिदं वचनं
यद्वाना । गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवसंज्ञा नानाप्रमथसंज्ञं च । याय श्रुति विधीयते । गत्मान् देवद्यानि नाहि द्विजायदा ॥ सच्चिदं वचनं

20

सु४

पृ६३

श्रीक
दाव

४५

दा। आनीगादिगदानाजा। नरुआक्रमवाचनी० ॥ नाअदलंमहलस्य। सुवे० सुवे० मरुथिलि० ॥ तदागलं स्यादय० सर्व० नद्यर्थययासम० । नद्यर्थायत्रसायकाविद्याधनमहात्रय०
य० का० सुय० सुय० य० ग० । य० वा० सुवर्गवासिन० । गवामहात्तवाजाभादेवय० य० । ने० ग० ॥ न० स्वगु० य० मुद० य० नि० न० इ० इ० य० ॥ सम० ग० नयका० पु० ज० गु० सु० ग० । ग० था० वा० श्रा० नि० वा० द० का० ॥
न० रु० का० न० न० सु० ग० ग० था० वा० अ० म० हा० त्ते० व० ॥ अ० रे० वि० क० सु० दा० ग० ग० । वृ० ह० स्य० गि० य० न० ग० मे० ॥ अ० वि० ना० व० द० सु० क० य० । य० था० व० रु० स्य० य० ज० न० ॥ क० ग० वा० श्रे० व० सु० वि० रि० वि० द० रि० री० वि० गा० त्सा० रि० ॥
न० (ये० व० स० व० ॥ य० वि० य० जि० ना० म० हा० न० न० ग० म० ना० न० न० रु० य० सु० दा० ना० ॥ ०० न० दा० स० न० य० न० सु० मा० न० न० य० ॥ स० सु० य० मा० न० ॥ य० न० म० न० व० ज्ञ० सा० ॥ स० न० थ० दी० य० य० सु० वा० स० गा० नि० गा० । ल० का० न० री० ने०
० सु० वि० ना० जि० ना० ग० ॥ वे० लो० ग० दा० ना० ॥ न० रु० यो० म० नी० न० ॥ ०० सु० य० मा० ना० हि० न० थो० सु० न० न० ॥ ०० । ने० ये० न० म० क० लो० क० ला० नि० गा० सो० । सु० न० ग० (ले० य० य० सु० मा० न० ॥ न० रु० य० न० य० व० ना० र० व० सु० दा० ना०
स० ये० दि० म० ना० ह० च० न० य० न० ग० य० ॥ ॥ न० रु० य० उ० वा० च० ॥ ०० न० दा० नी० के० क० थ० म० ये० व० ना० या० नि० म० म० सी० नि० (यो० । ग० वे० वा० क० ये० ना० नी० धु० मा० वि० ल० वि० उ० म० ह० थ० । न० रु० य० स्य० व० च० ॥ ग० र० त्वा
वृ० ह० स्य० गि० न० दा० न० धी० स० वी० र० व० न० मा० सा० य० उ० वा० च० व० स० वि० स्त० न० ॥ न० रु० क० स्य० इ० नि० मि० ल० न० । आ० नी० गा० न० रु० यो० ग० वे० । ना० अ० थ० रा० वि० नी० त्वं हि० । अ० र्द्धा० म० न० ग० ना० र० व० ॥ स० ची० य० स्य० वा० वा० च० वृ० ह० स्य०
गि० म० क० ल० म० । अ० सो० न० य० वि० य० (पु० हि० ये० के० ॥ न० का० स० न० । हि० न० ॥ ०० का० न० म० य० म० धी० ना० । ल० त० क० त० म० न० न० ॥ ग० स्या० न० यो० य० यो० य० मा० ग० त्वा० हि० वि० मृ० य० ना० ॥ या० दि० मा० सा० रि० ला० या० हि०

६२

त्य२

गम३

य० न० मि० य० म० व० न० न० ॥ अ० वा० क० वा० ह० न० न० व० अ० ग० ग० ल० ल० रु० न० मा० ॥ ग० थ० गि० म० त्वा० त्व० वि० ना० वृ० ह० स्य० गि० न० वा० च० ग० । न० रु० य० का० म० स० न० य० । ग० आ० क० च० ग० धा० न० थ० ॥ ग० थ० गि० म० त्वा० वा० जा० सो० । न० रु० य० ० का० म०
मा० हि० न० ॥ वि० मृ० य० य० न० यो० व० ध० अ० वा० क० कि० ये० ल० स्य० न० ॥ स्व० व० अ० च० चि० र्त्त० स्मृ० त्वा० । वा० क० ल० य० ग० य० सि० न० ॥ अ० वा० क० पु० रु० व० ग० मा० दा० त्मा० न० वा० ह० या० म्या० ह० ॥ दा० य० चि० ग० स्या० ॥ अ० क० य० र्त्त० ॥ नि० म० ह० दि०
व० रु० ग० । नि० वि० का० च० द० दी० ना० स्या० दि० जा० य० का० म० मा० हि० न० ॥ उ० य० वि० य० ग० दा० ग० स्या० । नि० वि० का० य० स० मा० हि० न० ॥ स० र्थ० स० र्थ० गि० वे० च० ना० र्थ० गि० ना० वा० क० (म० न० हि० ॥ ग० न० वा० ज० न० र० त्वा० । वि० य० न० म०
या० इ० न० र० या० न० । उ० रु० म० च० य० द० या० य० । नि० र्थ० (ग्या० नि० ग० ना० रु० व० ॥ य० था० हि० न० रु० यो० वा० जा० । ग० था० स० व० यि० ना० ह० ल० ॥ या० य० व० गि० य० द० थ० वे० । ग० य० चि० वि० य० द० रु० व० त० ॥ थ० म० दा० धा० इ० ना० वा० ना० ॥ का० म० का० वि०
य० या० त्म० का० ॥ दि० जा० य० वा० द० र्त्त० य० का० ॥ य० ग० गि० न० व० क० (गु० यो० ॥ ग० स्या० त्त्वा० य० य० त्त्वा० न० । य० द० या० य० वि० च० क० (ले० ॥ अ० य० म० रु० न० र्त्त० र० ग० य० मि० हा० म० गु० च० ल० य० ॥ ग० थ० वे० न० रु० य० ॥ स० र्थ० जा० ना० व० ल० म० हा० र० थ० ॥
उ० र्द्ध० च० वा० रु० व० रु० ग० द० व० ला० क० क० ना० के० जे० । ग० थ० वे० न० सु० ना० ॥ स० व० वि० स्म० यो० वि० रु० मो० न० स० ॥ अ० हा० व० ह० ल० क० । आ० र्थ० ना० क० क० न० न० व० । न० म० र्थ० सा० का० न० स्व० र्त्त० जा० ना० क० स्य० इ० ना० त्म० न० ॥ स० गा० म० व० रु० या० स० य० ॥
सू० क० नी० द० य० म० वे० हि० ॥ या० हि० का० क० य० वा० सा० क० क० थ० गि० व० म० हा० म० न० ॥ ग० दा० वा० च० म० हा० ग० ना० ना० व० दा० म० नि० सु० रु० म० ॥ य० या० गि० व० म० हा० रा० ना० । आ० र्थ० ने० धृ० त्वा० नि० गा० ॥ द० व० दू० ता० ग० ता० गू० । य० या० नि० इ० न० मा० न०
य० न० ॥ वि० मा० न० मा० न० क० ग० दा० म० हा० त्मा० । य० यो० दि० र्द्ध० व० दू० ने० ॥ स० म० ग० ॥ य० न० रु० ना० द० व० व० र्त्त० सु० दा० ना० । ग० था० न० (ने० र्थ० क० र्ण० ध० र्द्ध० सि० द्ध० ॥ आ० या० ना० क० म० ना० व० र्त्त० गि० द० (ले० व० रि० ना० यि० ग० ॥ ०० न० दा० स० न० यो० य० वि० श्रा
व० रा० थ० च० स० म० त्त्वा० ॥ ना० व० द० न० व० वा० क० मु० त्त्वा० जा० क० नि० का० क० सि० ॥ स० गा० म० व० रु० या० आ० क० । न० रु० यो० द० द० गू० क० ग० ॥ थ० या० य० व० नि० ध० मि० द्ध० ॥ द० व० न० य० न० म० य० द० ॥ या० क० न० न० व० मृ० दा० त्म० न० य० र्थ०

0

क
३॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः

शिवपुर

[illegible]

संका लिदः ३

ॐ श्रीगणेशाय नमः

५३

कृष्णलघियमानन चामनलविनाजित॥ गदासर्वसमगाहि, लाकयालेथुगात्रिणि॥ वृक्षुविलासगसर्व, लाकयाला महामा॥ ॥ यहीगांशु निर्वलत्रलमायय॥ मनसाविगतयनार्थं कर्तव्यलाकः
नकरी॥ निगर्तययविधिवग, महमुजयकामक॥ गुनलविदिगासया, विनृयनययलहि॥ उवाचचगदालकैवृहस्य निर्वदात्रधी॥ ॥ वृहस्य निर्वदात्र॥ कारिकगुह्ययकैगु, मन्दवा
नगयादली॥ मेमेअयदिलेथग, सर्वयार्थनमलयभागस्ययिदायसमय, निगनृयीमहमुन॥ यूननीयाहिदवैनु, सर्वकामसमृद्धय॥ स्नात्वामधमक्रसंथ, गिरामलनसंयग॥ निव
स्यवाञ्छनंकृष्ण, इन्धययारुलादिलि॥ ययानुदोयसमय, स्ववर्तलिङ्गमर्द्धयग॥ स्वयंशुवंस्त्वयिगर्वा, वीनृषयमयनृष॥ जनवाविजनवायि, जनवागयाचने॥ गजिङ्गमर्द्धयहृ
पुदायचविनेयग॥ गु, मोदहिलिङ्गनिङ्गमयाङ्गुनगुर्लरवत॥ वाङ्गुनगुर्लरवत, मर्द्धिगयावर्गग॥ ॥ यावर्गाञ्चवलिङ्गञ्च, रुतवायगसंक्रु॥ गयावनालिङ्गनिङ्गमर्द्धयजिगर्चमहा
रुत॥ गसाद्वंविगागन, निवयुगाञ्चनवर्ध॥ कर्कृयंनियनल्वेन, गीर्थस्नानादिकतथ॥ यययिङ्गननृधृय, वायस्नानमलेधन॥ कृयस्नाननेकवीग, उङ्गनविनेयग॥ गगानदग
यिङ्गुंय, उङ्गयस्नानमाचनग॥ नयस्नानं विलिङ्गच, महानयं विनेयग॥ गगयुदायसमय, स्नानमोनसमाचनग॥ यदीयानां सहस्रं, दीयनीय॥ सदा निव॥ अथदीयननेना
यि, दामिङ्गदीयमालया॥ दृगनदीययदीयान, निवस्ययत्रिगुह्य॥ गथारुलेयदवैय, नवैयनृधृयक॥ उयचाव॥ यागुगारि, लिङ्गनृयीसदालिव॥ यययदायवलाय
नृरि॥ सर्वार्थसिद्धय॥ यदकिङ्गपकृष्ण, गगमेङ्गारुग॥ नमस्त्वानयकृष्ण, गावर्तयययग॥ यदकिङ्गनमस्त्वयि॥ यलनीयं सदा निव॥ नाम्नागनेन नृडासी, सवनी

20

15

10

5

0

कृदा
न ॥

व ३

यायथाविधि॥ नमो नूतनाय हीमाय नीलकण्ठाय वधस । कयर्दिनसूत्राय चामकण्ठाय च नमः॥ वृषध्वजाय सामाय सामनाथाय च नमः॥ दिगम्बराय नमः॥ उमाकान्तकयर्दि
न ॥ तथा मया यथायाय निधिविद्याय नमः॥ चालयियाय चालाय चालानायाय नमः॥ महाधनाय चाखाय चालुनाय नमः॥ गियना नकाय सिंहाय सन्नाइतु
सखाय च ॥ मीनाय मीननाथाय सिद्धाय च नमः॥ कामाक्षिकाय च वृद्धीनाय नमः॥ कथागाय विनिष्ठाय निष्ठाय च नमः॥ वंदाय वंदवीजाय वंदगुप्ताय च
नमः॥ दीर्घाय दीर्घनूयाय दीर्घाथय महाय च ॥ नमो जगत्पुत्रिणाय चामनूयाय च नमः॥ गजसूत्रमहादेव्य जूधकासूत्ररुदिन ॥ नीललाहिने पुत्राय च नमः॥ रूकिवि
याय दवाय क्लान्ताय च ॥ महान्नाय नमः॥ महादवहनाय च ॥ गिनगाय निवेदाय च नमः॥ अर्थाय अर्थनूयाय च नमः॥ विष्णुनूयाय
विष्णाय विष्णुनाथाय च नमः॥ लंकिनाय च कालाय कोलावय च नमः॥ लूनाय विनूयाय सूक्ष्मनूयाय च नमः॥ गम्भानवा सिनयुर्थ नमः॥ कृत्वा सस ॥ गम्भानवा
नाय च नमः॥ इन्द्राय इन्द्रवासाय इन्द्राय च नमः॥ सिद्धाय सिद्धनूयाय सिंमनाय नमः॥ नमः॥ युलव नूयाय युलवाथय च नमः॥ नमो नमः॥ का
कावलकानेनाय नमः॥ मृत्पुत्राय त्मरुवस्तुयि ॥ शम्भुकाय निनिकलुगर्भ ॥ मेवीयने सकनमः॥ लहगव नमः॥ ॥ बृहस्पतिनूवाच ॥ नानां नमः॥ उच्चाय उचि
नागदा ॥ युदक्षिण नमः॥ वनत्सेख्यः ॥ यत्नगः॥ कार्ययुदाय समथ ॥ उच्छार्थ ॥ लंकनस्य च ॥ उर्वरुग समादिष्टं गवणक महामन ॥ लंघुं कुरु महाराज ॥ यथाशक्तीः

ज ०

चार्यः मृत्विजः वा उल्लसवन् ॥ सुयत्रिंशत्तननेव रान्नवनमहात्मना ॥ नूनमक मलगं कर्गदीक्षा यत्र लहि ॥ वलिना चान्द्रमध्वना यर्लुं कर्तुं समादध ॥ यावद्यज्ञं गंयुर्लुं गसावाङ्गु विज्ञ
नि ॥ युनाथा कं मया चागच्छ दिव्यावगममूढम ॥ खने नने न संयुष्ट ॥ रुगवानह विनीतुवः ॥ वदुनूथल मेहनायूगारुभा वरु वसः ॥ आदित्यं कथयनेव अयनी गसुदयुः ॥ उमीगथ
संयाय ॥ वक्ता लोकयिगामह ॥ गेह यज्ञाय वी गधस्व क्लमयत्र मंदिना ॥ कलुका सुयुदरुहि ॥ सामे नच मेहात्मना ॥ मखे च स नानीगा ॥ कजिनं यत्र माहुरी ॥ गधिवया इकं च व न
आदलं महात्मनः ॥ गगुलि कासमानीगा ॥ रुवानया चार्थ सिद्धय ॥ उर्वरुग वने दलं विष्णुं वदुनूथिने ॥ अरिर्वध गदोली ॥ लो वाम नोज दिगिगध ॥ कथय च महानोज ॥ यज्ञवा
रुज गमच ॥ याज्ञिकस्य वलं ॥ सोयि ॥ कुलनाथं स्वयं युगु ॥ गदामहीनः ॥ सज गममोर्न ॥ युकेस्य ये न गंयु ददो रं वल ॥ सवामना वदुनूथी च सोका ॥ द्विष्ट ॥ यत्र मात्मा सूत्रकायं हता ॥ गी
हियं धा रित्रिगुष्ट गजने ॥ मुनीन् वदुनूथिने ॥ लो मेहात्मा ॥ त्वत्र ल गच्छ च यज्ञवाट ॥ आय सदानां जने दक वध ॥ उमान सोमध्वय गहि सोका ग चकाव ॥ अवा वदुनूथी वल ॥ उमीयमाना
रुगवान् मेहना ॥ वदोक्त वधाह विनीतुवः ॥ युगु ॥ ददलं गंयु क्लमयत्र मंदिना ॥ द्वावि लिगामहानोज ॥ वाम नावदुनूथी धुक ॥ वदुनूथल मेहना ॥ याकमासी दिगं गन ॥ य ० मानस्य
चवठा ॥ वामनस्य महात्मनः ॥ उत वृत्ता वलि ॥ युगु ॥ लुगुम कर्तुं वदुनूथिने ॥ वाक्कल ॥ कनिर्गुगु ॥ कनिर्गुगु ॥ निनोदगा ॥ गेथ गि मत्वा त्वविना ॥ वृत्ति गोच दिगो गध ॥ लुगुम कर्तुं समा गत्य
उवर्जने संदिगा ॥ ददलं गं महात्मानं ॥ गीह विवदुनूथिने ॥ त्वविनीयुन नाया मो वलं ॥ सल यिगु गदा ॥ उक्ते वा वि ॥ समायागा ॥ अकने वनचायन ॥ य ० नादा महानाज ॥ अगन सुवमं दिनी

महा ३

20

कदा
न॥
३१

किमर्थं न न जानी मा जानी हि त्वं महामन ॥ अवमूकं वचनं लुप्तं कर्णं महामन ॥ उक्तिं न सुगच्छं धवदं नार्थं वदं युनि ॥ सददर्शनं महामन विज्ञाचनं सुगमं महान ॥ दधुवत्य निगाहं मोनना
मनिना वदं ॥ अनयित्वा वदं सय ॥ सुनिवन्धनं निजासनं ॥ पुष्ट्या धनं महान ॥ त्यर्चयामासे गे वदं ॥ मनसुर्क धनं लुप्तं ॥ उवाच लुप्तं क्रिया निना ॥ कृणु कस्माच्च के स्या सि गच्छे कथं गायिका
॥ गच्छेत्वा वचनं न स्य ॥ विनाचनं सुगमं स्य ॥ मनसा हृष्टमा ना सो ॥ वामना वक्रमात्रेण ॥ ॥ जीवामन उवाच ॥ त्वं हि नाजा नि सा के लो ना म्पारु विगु मे हं सि ॥ त्वं कूलं न्यूनं गीग च आ विका
यूयं सुग ॥ सुगमं या धिका वा वि ॥ योगं कृत्य नृप ॥ सुग ॥ त्वया कृणु च ये त्वं म्प ॥ ने कृणु यवै ज सुव ॥ देत्या ना च ये निष्ठा य ॥ हि नृप क निष्ठा दय ॥ कृणु महामन या थ ने ॥ दिशं वर्य सहस
क ॥ लनी नृप किं गय स्य रु यान स्य गयामहान ॥ विपीलिका रिर्वद रिर्द्वि ले ॥ त्वे वं लमी कृणु ॥ जरे व रु स्य ग गच्छेत्वा ॥ सुनं लोका गग ॥ युना ॥ न ग रं ग स्य च गदा ॥ सुनं महामन वृणु ॥ गत्वा धी च हं ग
॥ सुवै कृत्वा दय गगु नो ॥ कया त्वं महिषी ग स्य ॥ नीय मा ना नि वा वि ग ॥ ना न द न य ना ना जन ॥ किं विक्ता र्थं विक्ता र्थं ॥ लोका ॥ यु सो दा द विर्त्त ॥ मन सा य त्म मी विन ॥ देत्यं लुप च न त्म र्थं गय
से व व ली कृणु ॥ ग स्य यु ग महामन ॥ यिता म्प विगु वत्स ल ॥ नाम्ना विज्ञाचनं विद्वन्निष्ठा थ ने महामनो ॥ दानं न ना ॥ विगु ना जन ॥ त्वं न व नि वे सा ग दा ॥ ग स्या त्म जी ॥ सि र्ग न जन ॥ कृणु गे ग य न
मै य ग ॥ यत्न हि थ ने महामन ॥ दय ॥ ल ल रु त्म र्थ ॥ लुप वि नि किं नो थ न ॥ त्वया ना स्य ग स ग य ॥ गुण म सि म या य वृ ॥ य वि गे ग व सु व ग ॥ अत्य क ह मि यो ग ॥ वृक्ष य र्थं वृने सु ग ॥ उ
ठ जा र्थं व म द हि ॥ लुमि मि र्थ वि द व न ॥ वटा लु स्ये व न द्वा र्थं गृत्वा व लि वे रा य न ॥ ह व टा य लु ग र्त्वा य इ के व च नं य ना ॥ निगु त्वा गे न जा ना मि ॥ गृत्वा म न य थ र्थं ग ॥ व द नी

३१

हा २

३३

३१

मृणु विक्ता मारु व ग ॥ विक्ता मा क म क र्ण ॥ लोका सु च ना च र्ण ॥ पद द्वय न या यु र्ण ॥ गच्छेत्वा दय व रु दा ॥ विहाय गत्वा नृप य व ॥ व द वा ज ना र्थ न ॥ युनं व र्ण नु या सो डय विष्ठा नि
जासनं ॥ गदा द व र्ण न श्रु वी म न य ॥ सिद्ध चा वि ल ॥ अग न ग व ल र्थ र्ण ॥ दृष्ट्वा य कृ य मि यु र्ण ॥ गगु व क्ता स मा ग र्थ म्पि च क य र मा त्म न ॥ कृणु न च व य ग या न नृप ॥ अ य रा ग न ॥
॥ विद्या धनं लुप्तं नृप ॥ किं नृप ॥ अग न ग व ल र्थ र्ण ॥ य कृ वा ट महामन ॥ व ल सु ग व वा र्थ ॥ हि ॥ देत्या अग ना लुप्त न न ॥ रि ॥ स व य वि वृ ना वा म ना व लि स द्वा नि ॥ दय
विष्ठा स न सा थ ॥ अ वा च न र्ण ग दा ॥ देत्या सो वा लि ॥ लुप्तं द वा ग न न म ह म म ॥ गिय द क म ले न व ॥ गृही ग र्थ य द द य ॥ य द म क य मि यु र्ण न द द स्य मि ड म गि ॥ ग सो न त्व या गृ
ही ग र्थ ॥ गृणी र्थ य द म व च ॥ लुप्तं कृणु नृप ॥ वाम ने न महामन ॥ वे ला च नि वि नि र्द स्य वा र्थ य द म वा च ह ॥ न व ल किं त्व या मू र ॥ कृणु म य र्ण ग यि र्ण ॥ अ वि व र्थ मा न कृ र्थ
हि ॥ द दा सि य न मा त्म न ॥ अ दो को र्थ ल किं का र्थ ॥ म ल्य क न त्व या ध ना ॥ लुप्तं कृणु व लि ना वि र्ण ॥ स य मा न ॥ र व ग ल्प र्ण ॥ व क्ता मा न मि द वा र्थ ग नृप ॥ त्मा न गे दा व वी न ॥ स म ॥ थ मि
म हा य किं नृप ॥ य ना न र वा म्प ह ॥ थ न र्द का वि र्ण स र्ण ग म्प ॥ किं य द म्प ह ॥ अ स म ॥ थ मि र्ण ग व र्ण कृ ना न न म हा त्म ना ॥ ग दा वा च व लि सा वि ॥ ना अ य र्ण म हा त्म न ॥ या व न्ने यि च द र्थ
लुप्तं नृप ॥ यि नि वा वि र्ण ॥ विष्ठा यि म्प ही अ दा न स्य र्थ किं चि र्ण सृ र्ण महान ॥ दोग र्थ ग ल्य द विष्ठा ॥ गृण र्थ य ल्य मि गृण ॥ न द दा सि क र्थ द र्थ ॥ नि व र्थ ल ग मि र्ण सि ॥ उ व मू क स द
र्यं नृप ॥ न महामन ॥ ना वा च किं चि र्ण द र्थ नृप ॥ सा ध सा ध ना ॥ म नृप ॥ वा च य द्वा लु ॥ किं ग वा सि न र्ण य ॥ य मि गृ ही कि ॥ ग कृत्वा म म त्वा मि न म य व ॥ न द दा सि गृणी र्थ य य द म्प ह

हा २

0

20

लने ॥ वनं वृषं च रुद्रं ग, सुर्वान् कामान् दत्तं दामिने ॥ गच्छतां वचनं गच्छतां वचनं ॥ यत्र मं हि न ॥ वनया मासं गदा वनं सा कर यावहं ॥ यदे मं यु स न्ना सि म्भु ज वा म न्ना पु ला द हि म यः
 विजाना सि अयत्नं गये वच ॥ उवे मं क सु भा वु द्वा गो ने क न इ ना त्म ना ॥ उवा च यं स न वा क्क म म व त्वं क ग सु वो ॥ आ गे स्य हि क्क र्वं मृ द्द नं ग जा नी हि न त्व ग ॥ पु ह स्य ग न क यं
 ह क्क ज य त्वं द दामिने ॥ ॥ उवा च ॥ ग दा वं दे स्य क्क ज य त्वं ॥ रु वि ष्णु नि न स न य ॥ वि ना रु क न वि थु न्दु क्क ज य त्वं ॥ रु वि ष्णु नि ॥ ग द्वा वु द्वा वा क्क म व द र्ता व का स न ॥ म ज
 य त्वं व म र्ध वा म रु क न वि ना यु ला ॥ आ भा हं द व द वं ल य सा दा ल व स यु नि ॥ उ वं ल व व रा रु त्वा गा न का हि म हा व ल ॥ म व द्वा द स मा लि त्वा द वां स ज यि ना रु व न ॥ य न ॥ य न व रु द्वा
 ल ॥ मं ग मं ग न के न हि ॥ म व द्वा द व ल ना यि ॥ ज य मा य ॥ स न स दा ॥ किं क र्क यं हि वा स्या रे ॥ य रु मा ने नि न ग न ॥ रु वि न द्वा मे ने स्मृ त्वा ग न ॥ स व क्क ल ॥ य द ॥ उ व क्क ल ॥ अ गे ना त्म ना
 क्क व व ल स वा स वा ॥ ॥ द वा उ व ॥ व लि ना स रु या गा ले मा स सी म धू स द न ॥ वि वृ वि ना हि ने स व वृ द्वा या घा ति ना ॥ य त्र ॥ दे स्य न्दु म हा रा ग ॥ गु गु म ह सि न ॥ यु ला ॥ य द्वा य न स न क
 च व धि ष्णु नि न स न य ॥ क ना या थ ने रु ग व न ल ॥ स व नु हा ल य ॥ दा ना य नि रु हं द व स दा ना ने वि धी य नां ॥ के यु गं च य न य त्वा रु व हि न्ना च थ व च ॥ स्य र्थ द वा वि जा नी ध ॥ रु द्वा
 वा न न वा क्क ॥ य रं वि स्त य मा य ना ॥ उ व द्वा ॥ य न स्य न ॥ ग नान रा न ना वा नी मा ज म्भु सि हि मा स र्थ ॥ वृ ह स्य नि दू न स्तु त्वा स व द वा व न व च ॥ हि मा ल ये म हा रा ग ॥ स व का यो
 र्थ ने ना वा ना ॥ ॥ द वा उ व ॥ हि मा ल ये मा हा रा ग ॥ गृ ण व च न हि न ॥ क रु म ह सि द वा ने ॥ वा क्क वा क्क वि ना व द ॥ ज ग य त्वं म हा रा ग ॥ स व वा च ग य नि ना ॥ ग सा त्म व र्थ

कदा
न

उ

गं

15

10

ग म ह नु स हि ना वि ला ॥ ॥ सा म न उ वा च ॥ उ व म स्य र्थि ना द वे हि म वा न नि वि स रु म ॥ उ वा च द वा न यु ह न वा क्क वा क्क वि द्वा म्भु ॥ म ह नु म्भु दि न्ध ग दा क्क य हा स स म न्नि गु ॥ ॥ हि म वा
 न वा च ॥ अ य द्वा व र्थ स र्थ म ह नु ल क्क ना ध ना ॥ किं क र्म ॥ स न का र्थ च ना व क स्य व र्थ यु नि ॥ यं य का व र्थ स र्थ य दि स्या म स न रु मा न ॥ ग दा व र्थ द्वा ग या म स न क स ह वा न्ध व ॥ अ च ना र्थ
 वि प द्वा किं क र्थ क न वा नि व ॥ ग स्य ग द्वा च नं ॥ स र्थ द वा स म क्क व न ॥ ॥ द वा उ व ॥ स र्थ य र्थ व र्थ च व क्क स म र्थ व र्थ यु नि ॥ ना व क स्य म हा रा ग ॥ गे ल्का र्थ वि वि क्क र्ण ॥ अ ने सा
 ॥ रु व द्वा ग स न का हि म हा व ल ॥ ग दा वा च म हा ने जा हि मा वा न स ॥ स न नु यु नि ॥ क ना या थ ने रु द वा ना व क्क द्वा रु मि क्क थ ॥ क थ र्थ रु त्वा न न व का र्थ ल्का म मे व हि ॥ ग दा स र्थ क थि ने स
 र्थ म ने ग वा क्क आ क य त्वा का र्थ ह ना ॥ गृ न य दानि वि ल वा क्क मे ने ग वा च द हि म वा य र्थ ने हि ॥ नि व स्य य न्दु ल च धी म ना ग दा व ॥ द्वा द र्थ ना व का र्थ म हा स्या ॥ ग दा स र्थ स न का र्थ
 रु स्या द्वा ॥ आ क स र्थ म ने रु व च ॥ ग स्या न्दु क्क र्ण रु व हि र्थ थ व र्थ म ह न ॥ क नु ग य नि रु हं ॥ क न्या ग थ ग स्य नि व स्य या ॥ नि री क्क ग मा नु स र्थ वि द्वा नी ॥ ग स्य ग द्वा च नं ॥ गृ त्वा य रु
 स्या व ॥ स न स दा ॥ ज नि ग या त्वा का न्या नि व र्थ का र्थ सि द्ध थ ॥ स न न च नि व र्थ क्क नु नी धी म हा म न ॥ आ ध न स्तु नु द वा ना रु वि ष्णु नि न स न य ॥ रु त्वा क्क नि वि ना ज थ द वे ॥ रु त्वा
 ह मा वि ने ग ॥ य त्वा के न च य रु द्वा स न का र्थ क न चि न ॥ ज नि ग या च क र्थ का म न का का र्थ सि द्ध थ ॥ द वा ना च म्भु नी ना ॥ ग ये व च न य सि ना ॥ यि र्थ न रु व नि म्भु ना क र्थ ज न न मे व च
 गृ य ज न यि त्वा र्थ के न का च व ना न मे ग य ह स्य म ना वा च ॥ स्य नि च हि मा ल र्थ ॥ ॥ म ना वा च ॥ य र्क रु व ना वा क्क य र्ण म त्वा ध ना ॥ क न्या स दा ॥ रु व का र्थ नृ न ॥ रु न ॥ रु न ॥ रु न ॥

मनक कार्य सिद्धय

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40

45

कदा
न॥

५७

लभक कानी महामन ॥ गस्मादिमृशसुचिरेस्वयमववृक्षा यथा हि गलेनयनगडयुगी ॥ हिमवान्कडयगुत्वा विषयावचनं गदा ॥ उवाचवाञ्छमधावीयवायकनलनिगं ॥ अनकन
 युकावलयनयामयजीवनं ॥ रुविश्रानिचनत्कार्यधीमातायनयलहि ॥ क्रिययाचवतत्कार्ययवायकनलनिगं ॥ ७० ॥ युवकिगानेन निविष्ममहिषीगदा ॥ दधात्रज० नकनाम
 नाशान्धवगीगदा ॥ महाविद्यामहामाया महालक्ष्मीस्वययिनी ॥ त्रुजलीवृद्धकासीच अवादाकायनीयनी ॥ गविहृदि विष्मलोकी ॥ ७० ॥ यत्रमासंतीवत्तवसामहारामभनाचान
 विसाचन ॥ मृगिचकुसुदादवा मृगयायंककिनन ॥ मनायोरुविश्रान्तासुथहिमवगानिगं ॥ ७१ ॥ गमिन्नैजागा निविजानामनामग ॥ पाइइगायदादवी सर्ववचिसुखय
 दा ॥ देवईइरयानेइ ॥ नेनुरुष्मभवागल ॥ ७२ ॥ गुन्मध्वयनय ॥ ७३ ॥ सिद्धवाविष्म ॥ युष्यवर्षलमहगावचयविष्मसुथ ॥ गदायसन्नमरुवत्सर्वे लोक्षसचनचन ॥ यदा
 हियागानि विजामहोसगी गदेवयसममाविष्म ॥ युका मूदं दवगलेमहयय ॥ सचावलासिद्धगुलसुथेव ॥ ७४ ॥ निगिस्त्वयनालकदोत्रखेनुनेवल्मभयार्थत्यति
 विंलुगिगमाधय ॥ २० ॥ लामणउवाच ॥ वद्धमानो गदासाध्विमेकगृहं गुरा ॥ अस्ववर्षयदाजागा हिमालयगृहं सगी ॥ महंलहि हिमजगति गगावेयनमुनेय ॥
 सुवर्गले ॥ यविवृगावीनरुडादिरिस्तदा ॥ ७५ ॥ गदायजयापकं महंल हिमवानययी ॥ गत्यादयत्तवड्युयावृत्त्यासहवृद्धिमाने ॥ यावत्समागताड्युनादिनासीनिवा
 विग ॥ दानल्लेनेनेवेदा कलभकं किनवहने ॥ यूनर्विष्मययोमाय नदिने हिमवद्विग ॥ विष्मकानेदिनालुपवेसाड्युमागग ॥ गदाकल्लेवचसुस्यनदिन

यवभल्लु ॥ ७६ ॥ आनयसुनिविचाग नदिनेवाञ्छमववीग ॥ गथनिमत्तगनंदी यवर्गवहिमालय ॥ आनयामाससगदा लंकवभाकनकन ॥ दृष्टगदानी सकलपुर्वयुक्तं तथाश्याली
 विनिमीनेनकनी ॥ कयदिनेचलुकलाविरुषिगं वेदानकवृथयत्रमासनस्तिगं ॥ ववत्तुगाथीचगदा हिमालय ॥ यनमूदयायदहीनसत्त्व ॥ उवाचवाञ्छजगदकममरं ॥ हि
 मातयादावे विदीवविष्म ॥ ७७ ॥ सगल्लेहमहादेवे यसादाकवर्णकन ॥ आनकयत्तया नित्यदर्शनार्थममाचल ॥ कमावीचगृहस्त्वयनायथा मेमदगन ॥ ७८ ॥ हिमवानुवाच ॥ अचल
 ८० ॥ दत्तवाचदं निनीर्णनटकथेन ॥ अस्मान्मयानया सोई नागकयं गडयुगी ॥ अचलवावेवीचुत्त ॥ युहसनुवाञ्छकाविद ॥ अर्थकमावीसुष्मलो गनीचानुपुलायिनी ॥ नीनीगयामेत्त
 सीयवावयामियन ॥ ८१ ॥ ७२ ॥ गगल्लेवचनं गस्यन ॥ निनालयं निष्ठुरं निष्ठुरं च ॥ गयस्विनाकवचनं निगम्यउवाच ॥ नीनीपुहसन्मवाणी ॥ ८३ ॥ नेनीउवाच ॥ गय ८४ ॥ निगं
 नीनाकनामिदिवर्लनय ॥ गववृद्धिनिर्जगागा गयसुपुमहात्मन ॥ कल्लेकायुक्तेनि ॥ ८५ ॥ गगल्लेवचनं हिमालय ॥ यावृत्त्यासहवृद्धिमाने ॥ ८६ ॥ गीमहादेवउवाच ॥
 गयसायत्रमलेवे पुष्टिनिनालयामहं ॥ पुष्ट्यावहिग ॥ ८७ ॥ सुलेअहं निष्ममिगल्लेग ॥ गसाच्चपुष्टिग ॥ सिद्धिं नकार्यसंगुहकविग ॥ ८८ ॥ यावृत्त्यावच ॥ यदेकयत्रयावाचा वचनं नक
 नत्वया ॥ साकिपुष्टिनिवस्यादनीगसांरवानकथं ॥ ८९ ॥ हिमालयवकर्षं गत्वेनाहियथगथं ॥ पुष्ट्यासर्वभगच्च वेद्धमस्तिनिर्गनं ॥ गसात्त्वयानवकेशं नवाञ्छकथचन ॥ ग
 कृष्णसिधदन्मसिधयन्मसिणकन ॥ गत्तवैपुष्टिगकार्यं मिथवावा निनर्थक ॥ ९० ॥ पुष्टिग ८१ ॥ यत्रगात्तुवा किमर्थं गयगगय ॥ त्वयाणीधूनायस्मिन्निगो हिमनिपुला ॥ पुष्ट्या

20

क
न

15

मिहिनासिर्त्तनजानासिहिर्त्तन ॥ वाद्यादनचकिंकार्यं न केन्मा कं वाधुनायुता ॥ पुक्रे ४ यत्रसिर्त्तयदिसत्यवचसुव ॥ गहिलयानरगर्ग, ममर्गकनसंयुति ॥ यहस्यरगवानदवा
 निमिर्त्तययवाचह ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ एतद्वद्वन्मसंवा निमिर्त्तसाधुनासिर्त्त ॥ एवमूक्तायत्रमात्मना ॥ गदाहिमात्यवाकमतावराय ॥ अनेवसादं गयसायर्त्तय
 नामिर्त्तययवमार्थराव ॥ गयस्यममनूकाम, दानयायवगाधिय ॥ अनूक्योविनाकिंचिन्मच्चकेरुनवायुन ॥ उगच्छुवावयस्य, दवदवस्यनूलेन ॥ यहस्यरगवानर्ग
 मिर्त्तवचनमववीग ॥ त्वदीयं हिजगर्गसर्व, सधवासूवमानुष ॥ किमय्यदं महादेव उच्छरुत्तवदामिर्त्त ॥ एवमूक्ताहिमवगा, र्गकनलोकर्गकन ॥ यहस्यनिमिर्त्तयर्त्तय
 गिसादन ॥ लंकरं एतन्मूकग ॥ स्वर्गदं हिमानयय ॥ साद्विनिमिर्त्तयासाविष्यहर्दलमस्तिग ॥ एवकगियय ॥ कालागगायासनयागया ॥ सुगायिगायगवर्गकनइनगि
 कुम ॥ याध्वनिपनिगवचिन्मायदिनसुनो ॥ गचिन्मानाप्रसूवासुदानी ॥ कथं महल्लेनिमिर्त्तयसंभयुनि ॥ किंकार्यवचयवकुर्मा, वृहस्यनगत्तयसमाविर्त्त ॥ वृहस्यनि
 नवाध्वमहर्दयसुत्तन ॥ एवमवत्वयाकार्यं महर्दयुयगावच ॥ उगत्तयमदनमेव, नाजत्तान्य ॥ समर्थरविगागिसाक ॥ विष्णुविर्त्तगायतोनामर्त्तसि, गेस्मात्त्वयायार्थनी
 योहिमान ॥ गुगाध्वचनमाकर्त्तवाक्यमदनहवि ॥ ग्राहनादाजगमाध, मदन ॥ कार्यसाधक ॥ एतयासंभग ॥ सहमाध्वन, सय्यध्वनायुन ॥ सहाय ॥ महर्दयमानेयउवाचवा
 क्य, सगर्धिनैकाकमनाहनच ॥ अहमाकयिग ॥ कस्मानुबुद्धिमश्लचीयन ॥ किंकार्यकनवाधुय, कथंनोमविर्त्तयिर्त्त ॥ ममसंनलमाणलविर्त्तयहिनेयस्तिन ॥ त्वमवजानासिर्त्त

सुना ४

10

5

साकयावनी ॥ सुमूर्द्धनारुह्या, मदभनगुनीकृग ॥ विस्मयात्सुनयनावरुवसहसालिव ॥ एवविताकमानासो, दवदवाजगत्यनि ॥ मनसादुयमानन, एवमाहसदालिव ॥
 गगाविताकयनेर्त्तयुर्दिद, सुर्त्तसुसादव ॥ गावदृष्टादक्षिणस्या, दिलिगारुलनासेन ॥ चकीकृगधन ॥ सद्य, चर्त्तयवर्त्तसदालिव ॥ यावत्यव ॥ साधयिगामदनामदनोके ॥ गावदृ
 ष्टमहल्लेन, सगाधलनदक्षिणा ॥ निनीयिगसुगीयन, चक्रवायवमल्लि ॥ मदनसुत्तलदव, कोलामालावृगामहोन ॥ हाहाकालामहोनासीगदवर्त्तगयय ॥ ॥ दवउ
 च ॥ दवदवमहादेव, दवानावनदारव ॥ निमिर्त्तयासहायार्थयुविगामदनाधुनो ॥ वृथासूयाथदेवसा, मदनहिमहासुर ॥ त्वयाहिकोर्त्तयजगव, साकार्यसुनाययवभ
 लवर्त्तसा ॥ अस्यासमृत्ययमिदवर्त्तय, ननेवकार्यरेवगीहकार्य ॥ गावकनमहादेव, दवो ॥ सी ॥ गिरागर्त्त ॥ दमेर्त्तयविर्त्तयार्थ, गयचनिमिर्त्तयय ॥ वनयस्वमेहागान, दव
 काश्वदवर्त्त ॥ गजोसुनात्त्वयागागावयसर्व, दिवोकेस ॥ कालकृगवृत्तहि, नदिगात्मनचानोथ ॥ गस्मात्सुनायसर्वल, त्वयागानानसंलय ॥ मनदनायसमायोन ॥ सुप्रभाका
 र्यसिद्धय ॥ गस्मात्त्वयावदगायउयकानेयमहिन ॥ विनागनजगत्सर्व, नालेभयुगिलक ॥ निष्कामर्त्तयधर्म्मा, स्ववृत्तयविमृशती ॥ गदावाचवृत्तविष्णु, दवात्युगिमह
 त्वन, विनाकामनेशादवा, रविगर्त्तयनान्यथ ॥ यथामयनसुत्तय, सर्वदवा ॥ सवासवा ॥ यदनुस्तिगिद ॥ रवेनयोकोदेत्यसमालिग ॥ कामादिनवकोयेव, सर्वव्यापिलिनि
 च ॥ इहवृत्तयुक्तेन ॥ मयजानीध्वरायिर्त्तमम ॥ गावकायिदनाधवा, निष्कामाहिरविद्युति ॥ विनाकामनचकथ, यावमायनरीनव ॥ गस्मात्कामामयादव ॥ सर्वव्यापिनि

का २

य १

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40

45

20

सुनेद्यत्रिवा वि०॥ गनदृष्टानदादवी, सखि०॥ यत्रिवा वि०॥ यावत्त्याचनदादृष्टा हिमवाननित्रि०॥ सह॥ अत्युक्तनयनासाधियुगम्य नित्रसागया॥ गेयिनेयनदाउगुनर्वधु०
वसुसर्वग॥ स्वमङ्गमात्रायगदामहायन्म०॥ सुगन्धविस्मयवाच्यु वि०॥ उवाचवाक्यं मधुन हिमालय०॥ किंवेकं गसाधिनियथागथन॥ गत्कथं गमहाला०॥ सर्वगुणविता हि न०॥
गच्छतामुमधुन, मवाचयिगनयुनि॥ गयसाधनमलेवयाधिगोमदनान्क०॥ जागृममहत्कार्यं सर्ववामयिदुर्लभं॥ अगुगुमहादेवावतलार्थं समागम॥ समयाकलुदामनया
लिनेहकथंचने॥ कियनचत्वयांश०॥ ममयिगविनाधना॥ यथागमनमा०॥ ननगमा सो गियनानक०॥ गत्या०॥ सुवेचनं०॥ लोकावाययनममदं॥ वधुलि०॥ सहधुमा०॥ उवाचखनन
यून०॥ सुगुह्याग्रगच्छमावयं सर्वचरुधना०॥ त्वयाचाना धिगाव०॥ यिनाकीवृषरुधुज०॥ न०॥ लुचकगदासर्व०॥ हिमालयमभागमो०॥ यावन्नीसहिगो०॥ सर्वगुगुवृषा०॥ निनादृता०॥ गमि०॥ लुना
ना०॥ गदाहिमालयाअनायवाहववलिनीच॥ सर्वचलेला०॥ यत्रियाय्यात्तुको०॥ समानयासोसदानेसुमालय॥ गयेवदव०॥ सहचारले०॥ ममदुखि०॥ सिद्धगले०॥ सर्व०॥ युक्तमा
नागदादवीकुवाचकमलकृष्ण॥ दवानुखीनयिगुनयदानेसर्वानसमागगान॥ गच्छधुसर्वनवे०॥ नय०॥ अगुसमागगा०॥ स्वस्वस्वानयथायवा०॥ सगुगयनयामुदा॥ स्वस्वस्वानयथा
यथा०॥ सगुगयनयामुदा॥ उर्वगदानी०॥ स्वविगुगुहं गतावि०॥ लवेमानाचनमनवचसा॥ सायावनीदवव०॥ सुयुजिगा०॥ साविनयनीमनसासदालि०॥ ॥०॥ निजीस्व
ययना०॥ लोकदात्रख०॥ पुमेवम०॥ मुनी०॥ मेय्यासुय०॥ रुसा०॥ दयानामद्वि०॥ लविगमाध्याय०॥ २२ ॥ लामनउवाच॥ उगसिनननगमह०॥ ननयथादिना०॥ अज०॥ ०॥ सेहसा०॥
नचा३ य२ ऊ२ य१

10

३४ ल३

यमुवयाहिहिमालय॥ मानदृष्टासहसात्कय, हिमादि०॥ गिमानस०॥ यूजयामासगानसर्वानवाचनगकीधन०॥ ॥ हिमालयउवाच॥ किमर्थमाननायुयवुगागमनकाव०॥
गदाच०॥ सयमुवयामहंनयुत्रिगावयं॥ समागगा०॥ तत्सकालं कन्यायाचनिनीकले॥ गोनेमानेविद्वि०॥ लेल, स्विकर्णादल्योपुव०॥ गथेगियाकापुयय०॥ नीगानगयावनी॥
सात्त०॥ मेयत्रिगुका०॥ निनीन्ववत्त०॥ हिमवाननित्रि०॥ जाय उवाचयुहसन्निव॥ न०॥ यमामेदीयाहिवाक्यं०॥ गमधुना॥ गयहिनाववि०॥ सो, विनका०॥ मदनानक०॥ कथमू
घहमार्थाचयनानेक०॥ अत्योसनेनामिदु०॥ अत्युगुनविवर्जि०॥ वृत्तिहीनचमूर्खचेकन्यादानननसा०॥ मृद्ययच विनकायजात्मासंरा०॥ विगायच॥ अगुनाययमहायक
दादाननकात्रय०॥ कूलनीलवयुविश्यावयावि०॥ सनाथगा०॥ गुण०॥ सयवयमिगसकनायुदीय०॥ गसात्ममया०॥ विचोत्रित्वाहुवहि०॥ मिमृमा०॥ युदागशामहंनय०॥ उगनाउगम
रुमं॥ गच्छतामि०॥ नित्राजसवचनं०॥ ममदुखय०॥ उकययनयाच०॥ सुयुहस्यचहिमालय॥ ॥ अययउय०॥ यथाकृगं गयसीव०॥ यथाचाना०॥ धिग०॥ लिय०॥ गयसागेनसु०॥ यु०॥ सुसन्ना
य०॥ सदानिव०॥ अस्यासुत्येच०॥ लेलनजाना०॥ सिहिकियन॥ महिमानयप्र०॥ वनेसाधनायुयकृगा॥ निवायनि०॥ निजामेनी०॥ कूनखवचनं०॥ हिन०॥ गच्छतावचनं०॥ गया०॥ अवी०॥ रा०
गात्मनी॥ उवाचत्वनेयायक०॥ यवतानयवम०॥ अ०॥ हमनाह०॥ निमधह०॥ नृधमादनमन्दन॥ मेनाक०॥ कियतामश०॥ संलध्वययथा०॥ गदामेनाउवाच०॥ दवाक्यवाक्यवि०॥ नदा॥ अ०
मेवविमर्ष०॥ कृगकार्यं०॥ गदवहि॥ उत्पन्नहिमहा०॥ गमदवकार्यार्थमवच॥ युगेदशानिवाथ०॥ नि०॥ तस्यार्थेवाचगात्रि०॥ अ०॥ नया०॥ नाधिगा०॥ नू०॥ उ०॥ लय०॥ नि०॥ वि०॥ ॥ न०॥ य०॥ स०॥ ग०॥

0

CMS 5 10 15 20 25 30 35 40 45

20

क
॥

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40

45

॥२

मनिवायुनिदीयना ॥ निमिरुमार्गं कृत्यं च गस्या निनिवृत्तिर्न ॥ ७ गच्छुर्गवयसुस्यमनायय विहासिर्न ॥ पवित्रुश्च हिमादिप्रवाहं यदमवाचह ॥ पृथ्वीनयुनि निभ्रुर्गकित्यं न
 मर्मयुनि ॥ गगनं सप्तनीयसुता चनागा ॥ अमर्निर्गवायिहं मर्मखाता ॥ वैश्यं मेको वलयं दधानी ॥ रास्यत्युर्गचानु मही वलखा ॥ तावन्नासय शायिकां सुवदना ॥ नेत्री
 हास्युर्ग विभाही चमनं चमो सुवतया ॥ नेत्री सुवासिर्गुर्ग ॥ दृष्ट्वा यिमेपुष्यामो हमर्गमनडा नासु दासैरुमानाचू ॥ किनेवाक्कमवसु धियाक्का सनपुमहा ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥२

महानकिनीशरुमत्रतुलसर्ग ॥ सुवेजयं त्यावनमालयावृणं सनात्रदसं उवमेकसंदर्भ ॥ उवाचनात्रदाख्युर्गशर्वाक्षमथावनात ॥ वक्रवीक्षवाशमान ॥ सर्वभूमिभिसरुम ॥
 ७ ॥ हिमेहिमहाविष्णुमहादेवस्तुनातिग ॥ उवाहनाथर्गशर्वाक्षमथावनात ॥ वक्रवीक्षवाशमान ॥ सर्वभूमिभिसरुम ॥
 रुग्णवाननात्रदयं विद्युद्वाने ॥ नात्रदउवाच ॥ गयसोमहनात्रुजायावृणायविगाविग ॥ स्वयंभुवंगगसर्गयगसा निनिजासगी ॥ दासोहमेवदुर्गुद्वेवद्वजनाईन ॥ नात्रद
 नसमायैक ॥ यथैव ॥ यत्रिवोविग ॥ सुयधुमानुअगदा महात्माथानीपुनालयनमच्युमीमहान ॥ यथीगदाकाणयथैहविस्वर्य ॥ सनात्रदादववने ॥ सभेग ॥ गृष्ट्वा त्वविगदेवा
 थानि ॥ अथोद्विष्यवज ॥ अत्युक्तयमदायैक ॥ यत्रिस्वयं चलाभिर्न ॥ गदाहविहवीद्वीकयथैनगिष्टग ॥ उवाच ॥ सगदानान्यदेमैकलभमवच ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥३

[illegible]

धार् ३

[illegible]

म्य २

कदा
न ॥

राविगात्मना ॥ अर्वविस्तारयामास विष्णु कर्मावकुचयि ॥ मंदिनालिगथयायायगयरेवगिहगा ॥ रेववाः कृणया
न्य ॥ अधवा सिनः ॥ अष्टवृत्तवासिनः अन्तः स्वयनाष्टगथयव ॥ अथयगयविष्णुः गणगणवर्गनव ॥ कृणानि
गानि विष्णु कर्म ॥ गणवर्गसर्वग ॥ १ ॥ सभगा निवासिगास्तनहिमादिष्य ॥ सदाः सनायक यिनाचनकसा
नालकादावख ॥ पुलेवलाभचनुविंल गितमाध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ सोमलडवाच ॥ गगाय विविष्टः सर्वस
ल ॥ दीक्षा यवमयायक निवासार्थ स्वयं स्वयं सुव ॥ गयेव विष्णु स्वयं रावर्न स्वयं भवहिं ॥ रास्वर्ग सुविचिर्गचकृर्गन सुमनावर्ग ॥ यधु गृहमनाः कृच नयेव कृणवानः
स्वयं ॥ गयेव विष्णु यवममनाः कृः महेयरा देववर्गः सयुक्तिर्ग ॥ किलागुलकलयर्गय रुयामिनाः कृसूला रुगुग वनचकावह ॥ गये लं ॥ यवयाः रुवयाः सुस्वयिगते
नेहिमादिष्य युयु ॥ यगवथायिमहायुगावाः नल्लरुग नागिविधनेवाग ॥ गुहाष्ट सर्वनकदा विरागिगणवर्गयुष्टगद निवर्गिनः ॥ वरुगदाना रुवर्गकलका विष्णु
वादेव विदाम्बिष्टः ॥ विष्णुगवर्गः ययि युयुमाना हिमादिष्य कृणविदाम्बाना ॥ ३ ॥ सिर्गगर्गमनाः समायागासखीगले ॥ नीवजनाथं लं ॥ अष्टमृषिगि ॥ ययिवा विगा ॥
गदावादिग निधायेनादिग रुवर्गय ॥ नीवजर्गकृगगत्य ॥ भनयाचगयस्विनः ॥ अर्वसाकयनासाद्यी भनाजामागर्गयुति ॥ निविजाकमनस्मृय भना विस्मयमानसा

५०